मूल्य रु. ५-०० • मासिक

श्री स्वामिनारायण

सलंग अंक १०८ • अप्रैल-२०१६ • प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

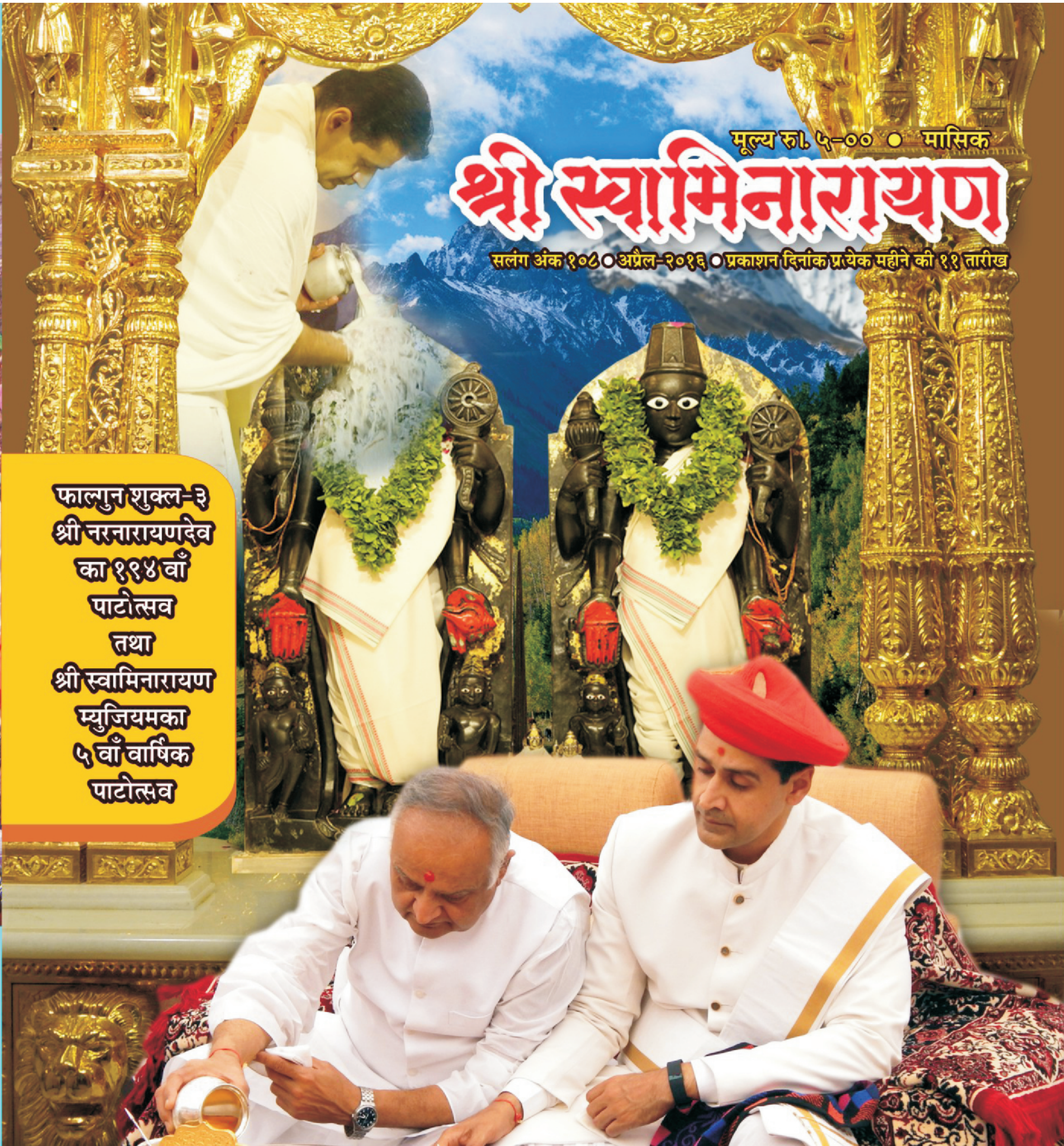

फाल्गुन शुक्ल-३
श्री नरनारायणदेव
का १९४ वाँ
पाटोत्सव
तथा
श्री स्वामिनारायण
म्युजियमका
५ वाँ वार्षिक
पाटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री नरनारायणदेव का १९४ वाँ पाटोत्सव - महोत्सव ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : १०८

अप्रैल-२०१६

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	ब्रह्ममुनि का जीवन वृत्तान्त	०६
०४.	अक्षरधाम की चौरवट	०९
०५.	श्री नरनारायणदेव देश गादी संस्थान के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट अहमदाबाद में सम्पन्न २० वाँ वार्षिकोत्सव एवं जीर्णोद्धार मंदिर के श्री घनश्याम महोत्सव की झलक	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२३
०७.	सत्संग बालवाटिका	२५
०८.	भक्ति सुधा	२७
०९.	सत्संग समाचार	२१

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवानने ग.प्र.प्र. ५० में कल्याण कैसे हो इसकी उत्तम वात की है। कितने लोग व्यवहार में अति चतुर होते हैं, फिर भी अपने कल्याण के लिये कुछ भी नहीं करते, कितने लोग शास्त्र पुराण तथा इतिहास में खूब ज्ञाता होते हैं फिर भी अपने कल्याण के लिये कुछ भी नही करते उन्हें कुशाग्र बुद्धिवाला नहीं समझना चाहिए। उन्हें मोटी बुद्धिवाला समझना चाहिये और जो कल्यण के लिये यत्न करते हैं उनके पास बुद्धि भले कम हो फिर भी उन्हे कुशाग्र बुद्धि कहा जायेगा। जो जगत के व्यवहार में सावधानी पूर्वक रचे पचे हैं उनकी कुशाग्र बुद्धि होते हुये भी वे मोटी बुद्धिवाले होते हैं। इसलिये जो कल्याण के लिये सावधान होकर वर्तन करते हैं वे कुशाग्र बुद्धिवाले हैं इसके अलांवा सभी मूर्ख हैं।

इसलिये प्रिय भक्तों ! हमें अपना कल्याण सिद्ध करना हो तो सर्वोपरि भगवान श्रीहरि की भजन कर लेना है। हम जगत के व्यवहार में रहकर के भी भगवान की भजन कर सकते हैं। विशेष रुप से अपने इष्टदेव का ध्यान, भजन, स्मरण अहर्निश करते रहना चाहिये। इसी में अपना इहलौकिक-पारलौकिक सुख समाया हुआ है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०१६)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के प्रसादी के चौखट को सुवर्ण जडित किये और अपने हाथों से दर्शनार्थ खोल दिये।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा (वासणा) नूतन मंदिर का खात मुहूर्त अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल दशाब्दी महोत्स व प्रसंग पर पदार्पण।

५ राजकोट में मूली देश के हालार आदि हरिभक्तों द्वारा आयोजित सत्संग सभा में पदार्पण।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

७ बालवा गाँव में प.भ. घनश्यामभाई मणीलाल ठक्कर इत्यादि हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

९-१० भुज (कच्छ) पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के १९४ वे वार्षिक पाटोत्सव को अपनी उपस्थिति में धूमधाम से संपन्न किये।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिवाडा पदार्पण।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोज प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पुनः प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाड पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकीया कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर कथा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२२-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ से ५ अप्रैल ओस्ट्रेलीया के धर्मप्रवास में पदार्पण।

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

ब्रह्ममुनि का जीवन वृत्तान्त

स्वामिनारायण भगवान के सखा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के पूर्वाश्रम का वृत्तान्त आदरणीय कविश्री मावदानजी रत्नुने ब्रह्म संहिता में जो प्रसंग का उल्लेख किया है उसके भी अधिक विस्तार पूर्वक आज से ११४ वर्ष पूर्व अर्थात् संवत १९५२ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को प्रकाशित ''श्री ब्रह्मानंद काव्य'' में देखने को मिलता है। श्री नरनारायणदेव गादी के तत्कालीन आचार्य प्रवर प.पू.ध.धु. १००८ श्री पुरुषोत्तमप्रसादासजी महाराजश्री तथा वडताल गादी के आचार्यप्रवर प.पू.ध.धु. १००८ श्री लक्ष्मीप्रसाददासजीश्री की संयुक्त आज्ञा से प्रकाशित करने वाले राव साहब करमशीदासजी (जे.पी.) तथा मोतीलाल त्रिभोवनदास फोजदार (बी.ए.एल.एल.बी. सोली सिटर) गुजराती प्रेस मुंबई से छपाकर प्रसिद्ध किया है। उसमें स्वामी का जीवन वृत्तान्त के कुल २५२ कीर्तन, दोहा, चौपाई, छन्द इत्यादि रचनाओं का विशाल ८१९ पेईज में संग्रह किया गया है। यह ग्रन्थ संप्रदाय में अप्राप्य है । परंतु ब्रह्मानंद स्वामी ताजी के मातृपक्ष महेसाणा जिला के देवरासणा गाँव से आदरणीय दादाश्री मोजदानजी गढवी के पास प्राप्त हुआ । उसमें स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के प्रसंग को देखे। इसके बाद एसा लगाकि सत्संग में अप्राप्य साहित्य सत्संगियों तक प्राप्त कराने के लिये संक्षेप में लिख रहे हैं।

इस प्रकाशन में स्वामी के जीवन के प्रसंगो की खोज करने में सहयोग करने वालों की प्रकाशक ने

प.पू.स.गु. श्री બ્રહ્માનંદસ્વામી

आभार माना है। और उने नाम को भी प्रकाशित किया है । जिस में शास्त्री ब्रह्मचारी बालमुकुन्ददासजी वडताल, स.गु. श्री हरिचरणदासजी स्वामी वडताल, ईश्वरदास इच्छाराम (वी.ए.) शास्त्री मुनेश्वरानंदजी वडताल, इच्छाराम सूर्यराम देसाई – (गुजराती प्रेस के मालिक) जे शंकरभाई महाशंकरभाई रावल – लखतर इत्यादि विद्या विलाशी के रुप में आभार व्यक्त किया गाय है। स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी पूर्वाश्रम में चारण ज्ञाति के थे। ऐसा कवि चरित्र में लिखा गया है। परंतु उनकी बारोट उपाधिदेखने से ऐसा लगता है कि वे भाट ज्ञाति के थे। पिता का नाम शंभुदान गढवी था। माता का नाम लालबा देवी था। इन दंपती का साधु संत पर बहुत आदर था। आबू पर्वत की यात्रा में जाने वाले संत खाण गाँव अवश्य जाते। एकबार श्रीमद् उद्धव संप्रदाय के स्वामी

रामानंद स्वामी पधारे । शंभुदानजी गढवीने स्वामी का सुंदर स्वागत किया । गाँव के चौक में सभी लोग इस प्रसंग में एकत्रित हुये, उस समय स्वामी कृष्णावतार के चरित्रो का वर्णन कर रहे थे । लालुदेवी को झपकी आगई, उदरस्थ बालक ने कहा कि हे गुरुदेव प्रगट प्रभु श्रीहरि की महिमा की बात की जिये अन्तर्यामी स्वामीने मंद हास्य करते हुए उत्तर दिया कि इस महिमा का वर्णन आप ही किजिये । मर्मभरी हुई बात किसी को ज्ञात नहीं हुई । लालुबा की कूंख में संवत १८२८ माघ शुक्ल पंचमी के दिन वृहस्पति के जैसा पुत्र का जन्म हुआ । माता पिताने यथायोग्य जाति संस्कार करके लाडूदान रखा । बाल्यावस्था से ईश्वर भक्ति प्रदर्शित हो रही थी । कुछ समय बीतने पर वाक्प्रतिभा भी प्रस्फुटित हो उठी । हास्य मुख प्राकृतिक स्वभाव दिखाई देने लगा ।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में पिता के साथ उदयपुर राणा के घर विवाह प्रसंग पर जाने का अवसर मिला । उस समय लाडूदानजी आशिक्षित होते हुये भी स्वाभाविक तीव्र बुद्धि के कारण काव्यो की रचना से राणा को प्रभावित कर दिया । इसके बाद भुज की पाठशाला में पढने का सम्पूर्ण खर्च राणाने उठा लिया ।

राणा की इस विचार शरणी के कारण शंभुदानजीने पुत्र ालडूदान को भुज में पिंगल सास्त्र का अभ्यास करने के लिये भेंज दिया । कविने प्रथम अभ्यास धमड़का गाँव के राजपूत लादा से किया । बाद में भुज नगरकी पाठशाला में प्रवेश किया । वहां आठ वर्ष तक पिंगल शास्त्र के साथ १४ विद्याओं का अभ्यास किया । अभ्यास पूरा करके राजाओं के दरबार में घूमना प्रारंभ कर दिये । जिस में जोधपुर, जयपुर, वीकानेर, जूनागढ, जामनगर इत्यादि राजघरानो से सन्मानित हुये थे । भावनगर स्टेट के राजा वजेसिंहजीने भी बहुमूल्य इनाम दिया है । इसके बाद कच्छ के भुज नगर में भी राजदरबार द्वारा संमानित किया गया । उसी अवसर पर एक ऐसा अवसर बना कि भुज नगर में भगवान श्री स्वामिनारायण पधारे, सर्वत्र भगवान स्वामिनारायण की चर्चा हो रही थी, उनके दर्शन की लालसा के कारण वे सुंदरजी सुथार के घर आये । श्री सहजानंद स्वामी अपने आश्रितजनों के मध्य में श्वेत वस्त्र धारण करके विराजमान थे ।

उस आनंदमय तथा प्रफुल्लित मूर्ति को लाडूदान थोडे समय तक देखते ही रहे । इसलिये लाडूदान की आंख में आंसू भर आये । जो मूर्ति माता के उदर में तथा आजतक प्रत्यक्ष दिखाई देती थी वही स्वामिनारायण भगवान आज प्रत्यक्ष मूर्तिमान दर्शन दे रहे थे । इस तरह हृदय में निश्चय होने से अत्यन्त आनंद हृदय में हो रहा था, परिणाम स्वरुप उनके मुख से ''आजनी घढी रे धन्य आजनी घड,ी इस पद की रचना निकल पडी । इसके बाद षोडशोपचार विधिसे श्रीहरि का पूजन किया । लाडूदान कुछ समय श्रीहरि के साथ भुजनगर में रहे तथा प्रतिदिन नूतन रचना करके श्रीहरि को सुनाते । श्रीहरि अमूल्य रत्न भेटं में देकर सन्मानित करते । कविराज की भूतकाल की बात को ताजाकराकर भगवानपना के निश्चय होने पर प्रभु को अन्तर्यामी जान गये ।

इसके बाद लाडुदानजी भुज नगर से अपनी जन्म भूमि खाण गाँव में पधारे उस समय वहाँ के आत्मीयजनोंने भी सन्मानित किया । वहाँ पर कुछ समय रहने के बाद देश-देशान्तर का पर्यटन करके राजाओं से सन्मानित होने का बाद शंत्रुजय होकर पालीताणा आये । वहाँ के राजा ने मूल्यवान पोशाक भेंट में देकर सन्मानित किया । वहाँ से गढपुर आये । वहाँ पर

विराजमान भगवान स्वामिनारायण का दर्शन किया। उस समय गढवी के साथ घोडा-रथ-नौकर-चाकर का समुदाय था। शरीर के उपर सुवर्णादि अलंकार शोभित हो रहा था। नींव वृक्ष के नीचे विराजमान श्रीहरिका भुजनगर के बाद दूसरीबार लाडूदान को दर्शन का अवसर मिला। महाराजने कुशलक्षेम पूछा। आदर सत्कार किया, कुछ बात करने के बाद श्रीहरिने कहा कि कविराज ! ये सांख्ययोगी बहने हैं, इनके साथ भगवान की वात कीजिये। यह सुनकर गढवी बहनों की सभा में गये वहाँ अनेकों ज्ञान की वात किये। उस सयम सभा में मोटीबा (लकिता)ने गढवी से सांख्ययोगी की तथा प्रगट पुरुषोत्तम के महिमा की वात पूछी तो गढवी का जो रजोगुण था वह शांत हो गया। गढवी बहनो को वंदन करके श्रीहरि के पास आये और श्रीहरि से अपनी उद्धव जैसी स्थिति को बताये, बाद में उसी समय अपने शरीर का अलंकारादिक उतारकर श्रीहरि के चरणों में भेट कर दिये। बहनो से शिक्षा प्राप्त करने के बाद साथ में आये हुए आत्मीयजनों को अपनी स्थिति बताकर कहा कि अब आप लोग अपने घर को जाइये मैं श्रीहरि की सेवा में रहूँगा। आत्मीयजनों के जाने का बाद गढवी का जीवन शुद्ध-शान्त हो गया अब वे श्रीहरि के साथ विचरण करने लगे।

देश-देशान्तर में घूमते हुये सिद्धपुर की तरफ दंढाव्य देश के गेरिता गाँव में संवत् १८६१ में श्रीहरिने लाडूदान को महान वैराग्यवान समझकर वैराग्य की दीक्षा देकर साधु बनाकर रंगदास नाम रख दिये। गेरिता गांव धन्य हो गया। जिस स्वामी के जीवन का महत्व जिस गाँव में परिवर्तित हुआ वह गांव धन्य हो गया। इस गाँव का नाम सुवर्णाक्षर से लिखा गया।

कुछ समय बाद सोरठ में विचरण करते हुये कालवाणी पधारे थे। श्री रंगदासजी सदा श्रीहरि के साथ ही रहते थे। उस समय वैरागी साधुओं द्वारा हमारे साधुओं को काफी पीडा दी जाती थी। संत की पूजा सामग्री तोड़फोड़कर फेक दी जाती थी। इसलिये श्रीजी महाराजने अपने साधुओं को परम हंस की दीक्षा दिलाकर जटा कौपीन का भी परित्याग करवाकर नाम में भी परिवर्तन कराकर नन्दान्त नाम करके पांचसो संतो को इस संज्ञा से विभूषित किया और श्रीरंगदासजी का नाम ब्रह्मानंद रख दिया।

लाडूदान के आत्मीयजन जब घर चले गये उस समय वे लोग किसी कन्या के साथ लाडूदान का विवाह करने के लिये उन्हें बुलाने गये। उस समय वे लोग स्वामी को बुहत समझाये फिर भी वे अडिग रहे। ुस समय स्वामीने ''रे सगपण हरिवरनुं साचु'' यह कीर्तन गाया। यह सुनकर सगे-सम्बन्धी वापस चले गये।

इसके बाद सगा सम्बन्धी लोग वडोदरा के राजा गायकवाड से निवेदन किये कि हमारे पुत्र को वापस करवा दीजिये। गायकवाड साहब ने ''दाम'' नीति का प्रयोग करके कहा कि आप को पचास हजार रुपेय की प्राप्ति हो सके ऐसे गाँव तथा राजकवि की पदवी हमे देंगे आप गाँव (घर) वापस चले जाइये। उत्तर में कहे कि ''गायोजश गोविंद को पायो धन भरपूर''।

इसके बाद समय-समय पर की गई रचनायें संप्रदाय में प्रिसद्ध होती गई। परंतु उपरोक्त जीवन वृत्तान्त रसप्रद तथा अप्राप्य होने से प्रकाशित किया गया है। दोनो देश के आचार्य महाराजश्री तथा वडताल के ब्रह्मचारी तथा संत हरिभक्त के नाम के साथ यह ग्रंथ छपाया गया है। इसमें जीवन कवन संग्रहीत है कुल रचनायें तीन हजार पांचसौ जितनी है। इसमें कीर्तन, दोहा, छपाय, साखी का समावेस है। इसका पुनः प्रकाशन किया जायेगा।

अक्षरधाम की चौखट

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

भगवान श्री स्वामिनारायणने समस्त मुमुक्षुजीवों के कल्याण हेतु इस पृथ्वी पर मनुष्य देह धारण किया था। मूर्तियों, सत्शास्त्रो तथा धर्मवंशी आचार्यके माध्यम से इस धरतीलोक में प्रत्यक्षरुप से विचरण करने का वरदान दिया । आज भी श्रीजी महाराज इन तीनों स्वरुपों में सत्संग में प्रत्यक्षरुप से विचरण करते हैं । श्रीहरि स्वयं अति वैरागी होते हुए भी त्याग के पक्ष को विस्तारित करके उपासना के लिए दिव्य मंदिरों की रचना करके स्वयं मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की । संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर श्री नरनारायणदेव मंदिर अहमदाबाद में है । भगवान श्रीहरि तथा संतो हरिभक्तों के अथक परिश्रम से तैयार किये गये मंदिर में साक्षात् श्री नरनारायणदेवका अखंड निवास है । स.गु.श्री निष्कुळानंद स्वामी भ.चि. ८९ में लिखते हैं कि,

हरि मंदिर सारु हंमेश, लेवो एकेकु पदरो शीष ॥
आज अमे पण लेशुं, वासुदेवनी भक्ति करीशुं ॥
पछी सोनेरी पाघने माथे, लीधो छे एक पथ्थरो नाये ॥

इस मंदिर की रनचामें उपयोग किये गये एक-एक पथ्थर की अपनी ही विशिष्टता है । क्योंकि उसका संबंधसाक्षात् श्रीजी के साथ है । मंदिर में राधाकृष्ण देव के सामने जो स्तंभ है उसका भी अपना इतिहास है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने जिस बालस्वरुप धनश्याम महाराजकी मूर्ति की स्थापना की उसके यजमानश्री के परिवार में से कोईभी अक्षरधाम में जाता है तो अंतकाल में उन्हे भगवान के दर्शन अवश्य देते हैं । साधु आश्रममें बड़े घनश्याम महाराजकी अलौकिक मूर्ति का भी विशिष्ट इतिहास-महिमा है । इस मंदिर का सभा मंडप भी कलाकृति का भव्य नमूना है । आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के प्रसादीभूत निवास स्थान पर बहनों के मंदिर की हवेली भी काष्ठकला का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत है।

अहमदाबाद-श्रीनगर किल्ले के अंदर बसा हुआ है। नगर के अंदर बचे मंदिर में गर्भगृह के दरवाजे के अंदर देवो का साक्षात् निवास स्थान है । इस प्रकार गर्भगृह के दरवाजे के पास चौखट् के समीप आने का तात्पर्य है कि

आप भगवान के समीप आ गये है। आज इस लेख में देव के इस चौखट् के विषय में बात करनी है।

स.जी. प्र. ४ अ. २५ में स.गु. श्री शतानंद मुनि ने भी लिखा है कि, श्रीहरिने स्वयं कहा है कि इस रमणीय मंदिर की स्थापना का संकल्प स्वयं नारायण का ही है। वचनामृत में भी श्रीहरिने कहा है कि, हमारे स्वरुप में श्री नरनारायणदेव वहाँ विराजमान है। श्री नरनारायणदेव मंदिर में श्रीनर और श्री नारायण इस प्रकार की दो मूर्तिया है। परंतु दोनो का सिंहासन तो एक ही है। क्योंकि श्रीजी का वह एक ही स्वरुप है। जब यह सिंहासन बना था उस समय जो पत्र स्वंय श्रीहरिने लिखवाया था आज भी वह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम में अपनी मूल स्थिति में संरक्षित है। वह हरिभक्तों के दर्शन हेतु रखा गया है।

देव की प्रतिष्ठा करने के बाद श्रीहरिने देव की महा आरती स्वयं की थी। दो घडी, तक देव के दर्शन हेतु निनिर्मेष द्रष्टिसे स्थिर खड़े हो गये। (श्लो. ६३ और ६४) जिस प्रकार सारंपुर में हनुमानजी महाराजश्री प्रतिष्ठा के समय स.गु. गोपालानंद स्वामीने अपनी दिव्य दृष्टि से हनुमानजी के दर्शन करके अपनी योग शक्ति के देव का आहवान किया। इसी कारणवश आज भी देव प्रत्यक्षरुप से वहाँ फपस्थिति हैं। यहाँ तो साक्षात् भगवानने स्वयं अनपे देवत्व का क्षारोपण किया है। इसीलिए प्रलयकाल तक यहाँ देव साक्षात् स्वरुप बिराजमान है। नरनारायणदेव को स्वयं श्रीहरिने दंडवत् प्रणाम किया है।

उसकेबाद नरनारायणदेव के सिंहासन की चौखट पर बैठकर श्रीहरिने कहा कि, हे भक्तजनो ! श्री नरनारायणदेव की प्रेमपूर्वक सेवा करने से सभी मनुष्यों को सर्वरुप से अधिक कल्याण होगा। जो नित्य नियम पूर्वक दर्शन करने आयेगा वह इच्छित भक्ति और मुक्ति को प्राप्त करेगा। श्री नरनारायणदेव की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से दुत्रार्थी पुत्र, धराथी घन, विद्यार्थी विद्या, तथा कामार्वी काम को निश्चित प्राप्त कर लेगा। निष्काम पुरुष श्री नरनारायण की सेवा से भवसागर को पार करके ब्रह्मपुर धाम को प्राप्त होगा। यहाँ श्रीमद् भागवतादि सत्शास्त्रो तथा गायत्री का स्मरण-श्रवण करने से उनके सभी मनोरथ शीघ्र ही पूर्ण होंगे। इस प्रकार इस चौखट से श्रीहरिने आशीर्वाद का अभिषेक किया है। हरिभक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने का वचन दिया है।

इन अभयवचनों को स्वयं श्रीहरिने दिया है। और गर्भगृह की यहा चौखट, इस बात का साक्षी है। देव की प्रतिष्ठा के बाद आरती स्वयं श्रीजीने की थी। उस समय जो घंटनाद और डंके बजे उसको श्रवण करने वाली भी यह चौखट् है. वहीं पर देवों का आविर्भाव हुआ। उसी समय से आजतक पूरे विश्व में डंके की ध्वनि निनादित हो रही है। यह चौखट लौकिक दृष्टि से पत्थर है फिर भी सजीव है। जिस तरह हिमालय, गोवर्धन, गिरनार इत्यादि पर्वत पूजे जाते है। उसी तरह इस पत्थर की भी पूजा होती है, क्योंकि इसमें परम तत्व का वास है। गंगा-यमुना-नर्मदा-धेला जैसी सभी नदियों की पूजा होती है। छपैया का नारायण सरोवर, मान सरोवर, गोमतीजी जैसे तीर्थ पूजे जाते हैं। तुलसी पीपल जैसे वृक्ष पूजे जाते हैं। गाय-गरुड इत्यादि पशु पक्षी पूजे जाते हैं। यही इस देश की संस्कृति है. इस चौखट का साक्षात् अक्षरधामाधिपति का स्पर्श है। सदाप्रत्यक्ष देवों की तरह रहने का सौभाग्य है। इसीलिये तो निर्जिवपत्थर नहीं अपितु साक्षात् अक्षरमुक्त है। जिस खान या पत्थर में से यह चौखट बना होगा उसका भी निश्चित कल्याण होगा।

इस चौखट के भीतर काल का भी प्रवेश नही होगा। जिस तरह भुज में विनाशक भूकंप आया उस समय मंदिर के परिसर का भी थोडा नुकशान हुआ था। कारण यह कि उस समय काल की प्रदानता थी। लेकिन गर्भगृह में स्थित देवों को लेशमात्र भी आंच नहीं आई। इस चौखट के भीतर ही अक्षरधाम है। यह चौखट अक्षरधाम का चौखट है। इसी चौखट पर बैठकर स.गु.श्री वासुदेवानंद वर्णी जैसे् प्रकांड पंडित देवों की अद्‌भुत

रचना की है । सर्वज्ञानंद जैसे कुशल व्यवस्थापक संत यहाँ पर देव से प्रेरणालिये थे । स.गु. ब्रह्मानंद जैसे समर्थ संत तथा अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री जैसे अक्षरमुक्त इसी चौखट पर अपना मस्तक झुकाये हैं । इस चौखट की महत्ता तो देखो जिसके सामने बड़े-बड़े समर्थ लोग अपने मस्तक झुकाते हैं । देव के चरण के नीचे रहना पसंद करते हैं । यह समझ तो इस चौखट में भी है ।

जिन-जिन लोगों ने इस चौखट पर अपने मस्तक नमाये हैं उन-उन लोगों का मस्तक आज भी उन्नत है । यह इसका प्रताप है । आज भी अनेको प्रसंग पर हरिभक्तों का सहयोग करने के लिये श्रीनरनारायणदेव अपने सिंहासन के उपर से निकल कर चौखट पर पैर रखकर बाहर आते हैं । इतना भाग्यशाली यह चौखट है । ऐसे भाग्यशाली चौखट का स्पर्श हम सभी को होता है यह बड़ी भाग्य की वात है । यह मात्र एक ही स्थान ऐसा है कि जहाँ पर लोग अपनी मान्यता रखते हैं और पूरी होती है । देव मान्यता की तरह उस चौखट की भी मान्यता है । इस चौखट पर मस्तक रखकर देव की प्रार्थना करने से देव त्वरित प्रसन्न होते है, ऐसी अनुभूति उसी समय होने लगती है । इस चौखट का स्पर्श स्त्रियां नहीं कर सकतीं इसलिये मूलजी ब्रह्मचारी की तरह यह है ।

अखंड ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने वाले श्री नरनारायणदेव की अखंड सेवा में इतने वर्षो से यह चौखट पर पत्थर विराजमान है । इस चौखट का स्पर्श करते ही एक विशेष प्रकार की स्फुरणा होती है । देव प्रतिष्ठा के समय श्रीहरि के अपर तेज का दर्शन करने वाला यह एक मात्र यह चौखट है । अक्षरधाम का तेज भी इसी चौखट पर बड़ा है जिससे इसमें अपरिमित तेज है । इस चौखट के ऊपर जो की वाड था वह आज श्री स्वामिनारायण म्युजियममें दर्शनार्थ विद्यमान है । देव के इस चौखट का तथा कीवाड का जो म्युजियम में दर्शन करेगा निश्चित ही उसे देव दर्शन की प्राप्ति होगी । इस मंदिर में ऊपर से उड़ने वाले पक्षी भी कल्याण को प्राप्त करते हैं । देव का स्पर्श करके चौखट पर से आने वाली हवा शरीर को ही नहीं अपितुं जीव मात्र को पवित्र करती है । ऐसी पवित्र हवा का अखंड सुख प्राप्त करने वाला यह चौखट का कितना बड़ा माहात्म्य होगा, विचारणीय है । इस चौखट का स्पर्श मात्र का कितना बड़ा माहात्म्य होगा, विचारणीय है । इस चौखट का स्पर्श मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं । प्रभावशाली ऐसे देव के इस चौखट का महत्व सभी के समझ में आ जाये तो निश्चित ही कल्याण होगा ।

ऐसे महामुक्त चौखट को चिरकाल तक सुरक्षित रखा जा सके इसके लिये प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दूरदर्शिता पूर्वक विचार करके सुवर्ण से आच्छादित करने की आज्ञा दे दी । जिस तरह श्रीजी महाराज के सानिध्य में सुख प्राप्त करने का अवसर गढढा के नींब वृक्ष को था लेकिन कालांतर में काल कवलित हो गया और आज के लोग उसके सुख से वंचित रह गये ।

ग.म. १ तथा ३३ में वचनामृत में श्रीहरिने कहा है कि नरम डोरी से भी बार-बार आने जाने से पत्थर पर निशान पड जाती है । इसी तरह इस महाप्रसादी का चौखट हरिभक्तों द्वारा बार-बार स्पर्श होने से घिसा रहा है । इसीलिये इस चौखटके रक्षण के लिये, दीर्घायु के लिये, भविष्य की पीढी के दर्शन हेतु इन विलक्षण महापुरुषने सुवर्ण कवच से वेष्टित कराने की आज्ञा दे दी । महाराजश्रीने यह भी बताया कि सुवर्ण से वे,टित करने से इसकी महत्ता नहीं बढेगी बल्कि सोने की सौ भाग्य हो गई जो चौखट पर (महाराज के प्रसादी के चौखट पर) आवरण का रुप लिया । इस लोक में सोना कीमती समझाजाता है, इसलिये इस चौखट को सोने का कवच बना कर अर्पण किया गया है ।

सभी हरिभक्त भावपूर्वक इस चौखट को नमन करें क्योंकि अन्यत्र इस तरह का रहस्य महाप्रतापी चौखट कहीं नहीं मिलेगा । इस महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव का हमें भी दृढ आश्रय मिला है तथा भगवान के प्रसादीभूत इस चौखट का भी ।

श्री नरनारायणदेव देश गादी संस्थान के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट अहमदाबाद में सम्पन्न २० वाँ वार्षिकोत्सव एवं जीर्णोद्धार मंदिर के श्री घनश्याम महोत्सव की झलक

- शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (महंत स्वामी - वडनगर)

सर्वावतारी इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री स्वामिनारायण भगवान के सातवें वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री एवं प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी, प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी की पूर्ण कृपा से श्रीजी महाराज के समकालीन महासमर्थ अमदावाद मंदिर के सर्व प्रथम महंत स.गु. सर्वज्ञानंद स्वामी के शिष्य सगु. स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी (मारवाडी) के शिष्य स.गु. स्वामी देवकृष्णदासजी (काठियावाडी) तथा स.गु. स्वामी कृष्णस्वरुपदासजी (काका स्वामी) के शिष्य स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी द्वारा नारायणघाट मंदिर में योगसुविधा तथा श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी, श्री महादेवजी के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया । नंद संतो की छत्री, रीवर फ्रन्ट की दीवाल तथा दरवाजा का जीर्णोद्धार करवाकर वंशीपुर के लाल पथ्थर तथा ग्रेनाईट एवं मार्बल के पत्थरों से सुशोभित करके अजोड काम किया है । आज से २० वर्ष पूर्व अमदावाद के कार्य कुशल संत अ.नि. गवैया स्वामी केशवजीवन स्वामीने अपने देखरेख में इस मंदिर का निर्माण कार्य करवाया था । मंदिर में धर्म भक्ति हरिकृष्ण महाराज तथा घनश्याम महाराज की मूर्ति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों प्रतिष्ठित हुई थी । जिस में आवश्यक सुविधा स.गु. देवप्रकाशदासजी नारायणघाट के महंत स्वामीने अथक परिश्रम करके उपलब्धकरवाई ।

बाद में धर्मकुल की प्रसन्नता से सं. २०७२ माघ कृष्ण-१ ता. २४-२-१६ बुधवार से माघ कृष्ण-५ ता. २८-२-१६ रविवार तक श्री घनश्याम महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ । जीसमें श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण, त्रिदिवसीय हरियाग, श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी की मूर्ति प्रतिष्ठा, श्री ठाकुरजी की नगर यात्रा, जीर्णोद्धार मंदिरका उद्घाटन, श्रीहरि की महा आरती, धर्मकुलपूजन, पोथीयात्रा, श्रीहरि का महाअभिषेक, अन्नकूट दर्शन, स्वामिनारायण हामंत्रकी अखंड धुन, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, मेडीकल केम्प, रक्तदान केम्प, महिला शिबिर संतवाणी तथा सांस्कृतिक अनेक कार्यक्रम नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी तथा गांधीगनर सेक्टर-२ के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में किये गये थे । जिस में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी शास्त्री स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजी तथा को. बालस्वरुपदासजी के अथक परिश्रम से यह कार्य सरल हो गया था । इस कार्यक्रम में प्रेरणा देने वाले स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी ने जो सहयोग प्रदान किया उसके फल स्वरुप श्री घनश्याम महोत्सव में हजारों हरिभक्तोंने अपने तन, मन, धन का सहयोग करके भीगरथ प्रयास किया जिससे उन्हे अमूल्य सेवा करने का अवसर मिला ।

यह अलौकिक घनश्याम महोत्सव ता. २४-२-१६ बुधवार को प्रारंभ हुआ सर्व प्रथम श्रीमद् सत्संगिभूषम धर्मशास्त्र की पोथीयात्रा प्रात: ८-०० बजे कथा के यजमान डाह्याभाई नारायणभाई पटेल तथा उनकी धर्मपत्नी के निवास स्थान पर शिला लेख में से पूजन आरती के बाद श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्ति के साथ १०० जितने संतो का पूजन किया गया था । श्री स्वामिनारायण महामंत्र एवं श्री नरनारायणदेव की जयध्वनि के साथ मंगलयात्रा का प्रस्थान हुआ था । पोथीयात्रा गाजते वाजते के साथ रीवर फ्रन्ट (साबरमती नदी के तट पर) के ऊपर विशाल मंडप में पहुंची थी । पोथी को व्यासपीठ के ऊपर प्रस्थापित करके ब्राह्मणों द्वारा पूजन-आरती की गई थी । इसके बाद कथा पारायण के दोनो विद्वान शा. रामकृष्णदासजी तथा शा. चैतन्यस्वरुपदासजी व्यापीठ पर आरुढ हुए थे । महोत्सव के मुख्य यजमान श्री हिंमतभाई वशरामभाई लक्कड थलतेजवाला तथा उनके पुत्र धर्मेन्द्रभाई एवं मनीषभाई (यु.एस.ए.) तथा कथा के मुख्य यजमान पटेल डाह्याभाई नारणभाई (माणसावाला) तथा चि. मेहुलकुमार चि.

पुरवभाई दामाद पंकजकुमार दामाद डॉ. प्रणवकुमार इत्यादि परिवार के लोगों ने ग्रंथ तथा वक्ता का पूजन किया था । मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा भुज मंदिर के महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी एवं शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. भगवत्चरणदासजी, महंत शा.स्वा. श्यामसुन्दरदासजी (मूली), शा.स्वा. श्रीकृष्णस्वरुपदासजी, भुज मंदिर के पार्षद श्री जादवजी भगत इत्यादि संत मंडल के वरद् हाथों से दीप प्रागट्य किया गया था । इस मंगल प्रसंग पर भुज मंदिर के महंत स्वामी धर्मनंदनदासजीने नारायणघाट तीर्थ भूमि तथा जीर्णोध्धारित मंदिर की महिमा तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रसंशा की थी । भुज मंदिर के पार्षद जादवजी भगतने भी अमदावाद श्री नरनारायणदेव तथा भुज निवासी श्री नरनारायणदेव श्रीजी महाराज के स्वरुप है । नारायणघाट की भूमि तपोभूमि है । ऐसा कहकर श्री घनश्याम महोत्सव के प्रसंग पर सभी के सेवा की प्रसंशा की थी ।

श्री घनश्याम महोत्सव तथा नारायणघाट मंदिर के २० वें वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २६-२-१६ को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय धूमधाम से स्वागत किया गया था । पू. महाराजश्री ग्रंथ तथा वक्ताश्री का पूजन करके अपने स्थान पर विराजमान हुये थे । बाद में सभापति शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर महंत स्वामी)ने बताया कि नारायणघाट मंदिर के महंत देव स्वामी प.पू.ध.धु. आचार्यश्री का पूजन करें । इसके बाद मुख्य यजमानश्री हिंमतभाई रामभाई परिवार तथा कथा पारायण के मुख्य यजमान प.भ. पटेल नटवरभाई नारायणभाई परिवारने तथा अ.नि. गाथजीभाई ईच्छाराम शुक्ल, ईश्वरलाल लाभसंकर पंड्या के शिष्य मंडल तथा श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के यजमानश्री पूरव दशरथभाई पटेल परिवार तथा हनुमानजी की मूर्ति के यजमान श्री प्रकाशभाई पुरुषोत्तमभाई पटेल परिवार, तथा श्री गणपतिजीकी मूर्ति के यजमान प.भ. अ.नि. पटेल रसिकभाई अंबाला पटेल कृते चि. जयेशभाई, संजयबाई इत्यादि लोगों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पुष्पहार से पूजन किया था । इस महोत्सव के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने नारायणघाट मंदिर की भव्यता तथा नारायणघाट साबरमती नदी की महिमा एवं मंदिर के दोनो मंहत स्वामी तथा पूज्य सभी संतो की प्रशंसा के साथ देव की निष्ठा में सभी की द्रढता बने ऐसा कहकर सभी के तन, मन, धन द्वारा सेवा करने वालों को शुभाशीर्वाद दिया था । रामकृष्णदासजी ने अपने कथा प्रवचन से सभी को मंत्र मुग्धकर दिया था ।

२७ ता. को भूदेवों द्वारा हरियाग प्रारंभ किया गया था । इस दिन प्रातः ८-३० बजे गोदान पूजन तथा सायंकाल ३-०० बजे राणीप मंदिर से कथा मंडल तक विशाल नगरयात्रा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाता था । संतो द्वारा कीर्तन भजन का भी आयोजन किया गया था ।

ता. २८-२-१६ रविवार को प्रातः काल भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से देवों का अभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूटोत्सव का आयोजन किया गया । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री का महंत स्वामीने तथा यजमान ने पुष्पहार से पूजन किया था । इस मंगल अवसर पर बहनों की गुरु प.पू. गादीवालाजी पधारकर बहनों की भक्तिभावना की प्रशंसा की थी । महोत्सव के मुख्ययजमान प.भ. डाह्याभाई पटेल की धर्म पत्नी प.भ. विमलाबहन ने पू. गादीवालाजी का पूजन-अर्चन की थी । इस प्रसंग पर पू. बड़ी गादीवालाजी का पूजन अर्चन गं.स्व. पटेल मणीबहन भोलाभाई ने की थी । ता. २८-२-१६ को पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने ग्रंथ तथा वक्ताश्री का पूजन करके पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । यजमान परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था । अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामीने नारायणघाट मंदिर की महिमा तथा दोनो महंत स्वामीयों का गुणानुवाद किया था । हरिभक्तोंकी सेवा की प्रशंसा करके सभी पर भगवान की कृपा बनी रहे ऐसी प्रार्थना किये थे ।

इस प्रसंग पर व्याख्यानमाला में शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, वेदान्तस्वरुपदासजी (भुज), स्वा. राधारमणदासजी (जूनागढ), स्वा. भक्तिनन्दनदासजी (जेतलपुर), स्वा. हरिस्वरुपदासजी (गढडा), स्वा. नारायणचरणदासजी (वडताल), स्वा. सिद्धेश्वरदासजी (अमदाबाद), स्वा. कुंजविहारीदासजीने मंगल प्रवचन के साथ नारायणघाट की महिमा का वर्णन किया था । पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने इस मंदिर का इतिहास, संतो का

योगदान, रीवरफ्रन्ट पर आयोजन करने में सहभागी सभी भक्तों के सेवा की, मंदिर के दोनो महन्तों एवं सभी संत मंडल के पुरुषार्थ की प्रशंसा करके पुष्पहार से सन्मानित किया था। इस प्रसंग पर यु.एस.ए. से देव स्वामी के शिष्य व्रजभूषणदासजी शुभेच्छा प्रदान किये थे। इस सुभ प्रसंग पर स.गु. स्वा. ब्रह्मचारी राजेश्वरानंदजीने इस कार्यक्रम की सम्पूर्ण सेवा का उत्तरदायित्व लेकर अथक परिश्रम किया था। इस महोत्सव के प्रसंग में संहितापाठ करकने वाले संतो का भी सहयोग बना रहा। इस प्रसंग पर अमदाबाद के विद्वान संत स्वा. निर्गुणदासजी तथा जेदलपुर के महंत स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं हाथीजण के श्रीजी स्वामी, गढडा के एस.पी. स्वामी इत्यादि संतोने प्रसंग की तथा प्रसंग का आयोजन करनेवालो की प्रशंसा की थी। कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी एवं आनंद स्वामी तथा अन्य अभ्यागत संतोने नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी के सेवा की प्रशंसा की थी।

पूज्य संतो के पूजन के यजमानश्री : पटेल प्रवीणभाई चतुरबाई परिवार कृते भगवतीबहन (माणसावाला)

पूज्य सांख्ययोगी बाइयों के पूजन के यजमानश्री : पटेल लीलाबहन कनुभाई चोकसी परिवार अमेरिका (डिंगुचावाला)

श्री नरनारायणदेव ध्वज दंड कलश के यजमानश्री : अ.नि. अमथीबहन आत्मारामदास पटेल परिवार - कृते नरेन्द्रभाई (डांगरवा)

श्री घनश्याम महाराज के ध्वज दंड कलश के यजमानश्री : अ.नि. चंदुभाई ओधवजीभाई सोनी परिवार कृते रंजनबहन अमेरिका।

श्री गणपतिजी के ध्वज दंड कलश के यजमानश्री : सोनी प्रशांतभाई चंदुभाई परिवार (लंडन)

श्री हनुमानजी के ध्वज दंड कलेश के यजमानश्री : सोनी विनोदभाई बालजीभाई परिवार (केनिया)

श्री धर्मदेव भक्तिमाता ध्वज दंड कलश के यजमानश्री : अ.नि. समरथबहन ओधवजीभाई सोनी परिवार कृते प्रफुलबाई (जांवीया)

प्रथम दिन दोपहर के भोजन के यजमानश्री : पटेल घनश्यामभाई गणेशभाई परिवार (विहारवाला)

दूसरे दिन दोपहर के भोजन के यजमानश्री : ईन्दिरा कास्टबल प्रा.ली. - पटेल गोरधनभाई तथा लालजीबाई, अमृतभाई, विष्णुभाई पटेल (अमदावाद)

तीसरे दिन दोपहर के भोजन के यजमानश्री : अ.नि. नाथीबहन कालीदास नरसीदास पटेल परिवार गांडाभाई, अमृतभाई, विष्णुभाई (गुलाबपुरावाला)

चौथे दिन दोपहर के भोजन के यजमानश्री : अ.नि. रुबीबहन प्रहलादभाई सोमनाथ पटेल परिवार (राजपुरवाला) रवीन्द्रभाई, भरतभाई, अमीतभाई

पांचवे दिन दोपहर के भोजन के यजमानश्री : अ.नि. पटेल भक्तिभाई आत्मारामदास परिवार (डांगरावाला) अ.नि. पटेल कमलेशभाई भक्तिभाई

मंदिर में निर्माण कार्य कराने वाले महानुभाव

(१) सां.यो. मेघनाबा गुरु कानबा (गढपुर) (२) अ.नि. गोपालभाई देवजी पिंडोरिया (कच्छ) (३) वालजी करशन हिराणी (नाईरोबी) (४) गोविंदभाई खीमजीभाई पटेल परिवार (५) अ.नि. नाथजीभाई शुक्ल तथा अ.नि. ईस्वरभाई पंड्या शिष्य मंडल (६) धनजी नानजी हालाई परिवार (७) खीमजीभाई शामजी जेसाणी परिवार (लंडन) (८) धनजी लालजी पिडोंरिया परिवार (९) लक्ष्मणभाई खीमजीभाई राधवाणी परिवार (बडदिया) (१०) अ.नि. नाथीबहन कालीदास नरसिहदास पटेल परिवार (गुलाबपुरा) (११) अ.नि. नारायणभाई मोहनदास डेरीवाला परिवार (डांगरवावाला((१२) अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट (१४) पटेल सेंधीदास (१५) मूलजी लालजी वरसाणी परिवार (१६) शैलेषकुमार गोविंदभाई पटेल (मोखासणवाला((१७) अ.नि. प्रफुलभाई डाह्याभाई ठक्कर (१८) साकलचंद छगनभाई पटेल (१९) सूर्याबहन गिरीशबाई पटेल (राजपुर) (२०) लालजीभाई करशनभाई राबडीया (केन्या) (२१) नारायण मनजी केराई (बलदिया) (२२) श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल - कडी समस्त हरिभक्त (२३) हरेशभाई व्रजलाल सोनी (नाईरोबी) (२५) अ.नि. सोमाभाई वीरचंददास पटेल परिवार (इटादरा) (२६) गिरीशभाई सांकडचंदभाई पटेल (विहार) (२६) गं.स्व. शारदाबहन प्रभुदास माणेक (ध्रांगध्रा)।

संयोग वश किसी संत-हरिभक्त का नाम रह गया हो तो क्षमा किजीयेगा।

શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમનો ૫મો વાર્ષિકોત્સવ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમનો ૫મો વાર્ષિકોત્સવ

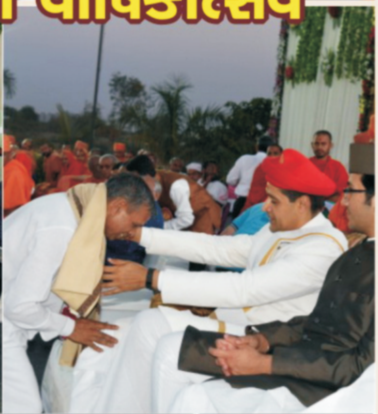

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારાયણઘાટ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ફેબ્રુઆરી - ૨૦૧૬

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારાયણઘાટને આંગણે ઉજવાયેલ

દિવ્ય અને ભવ્ય

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ

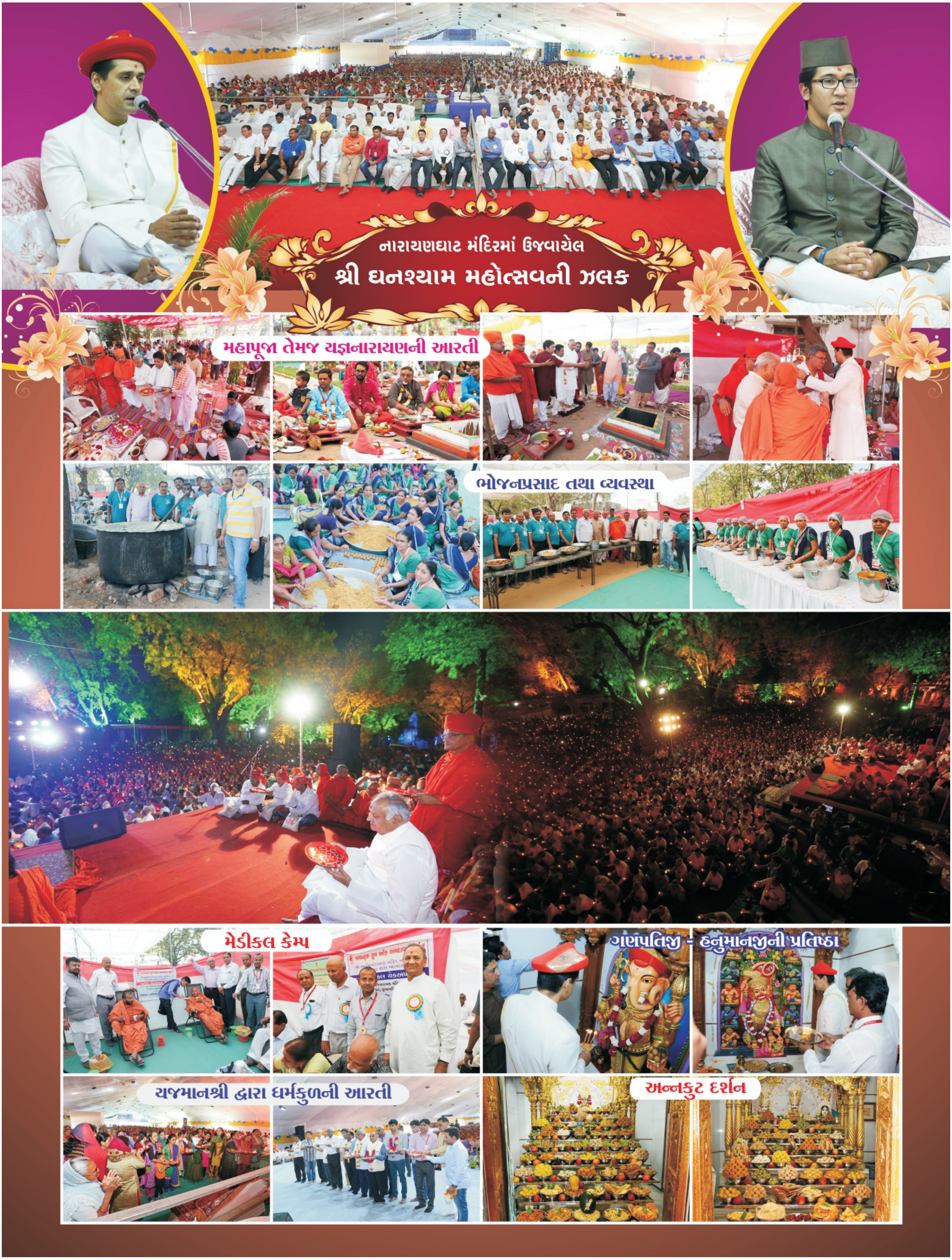
નારાયણઘાટ મંદિરમાં ઉજવાયેલ
શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવની ઝલક
મહાપૂજા તેમજ યજ્ઞનારાયણની આરતી
ભોજનપ્રસાદ તથા વ્યવસ્થા
મેડીકલ કેમ્પ
ગણપતિજી - હનુમાનજીની પ્રતિષ્ઠા
યજમાનશ્રી દ્વારા ધર્મકુળની આરતી
અન્નકુટ દર્શન

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ પ્રસંગે પધારેલા ધામધામથી બ્રહ્મનિષ્ઠ સંતોના મનનીય પ્રવચનો

અન્નકુટ આરતી ઉતારતા પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
સભામાં પૂજ્ય સંતો
વિજય સ્થંભ
પૂજ્ય સંતોનું સન્માન
યજમાનશ્રીઓના સન્માન
મહોત્સવમાં પધારેલ
પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના
રૂડા આશીર્વાદ

દિયોદર (બનાસકાંઠા) મંદિરમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

જેતલપુર મંદિરના ૧૯૦માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા તથા યજમાન પરિવારને સન્માનીત કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

કાંકરિયા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે શહેર ચોર્યાસી

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-३ का दिन सत्संगियो के लिये दीपावली जैसा उत्सव है । कारण यह कि श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने हमें अमदावाद में सर्व प्रथम मंदिर बनाकर श्री नरनारायणदेव आज के दिन प्रतिष्ठा की थी । १८९ वर्ष के बाद श्री स्वामिनारायण भगवान के ६ ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री ने हम सभी को विश्व का सर्व प्रथण श्री स्वामिनारायण म्युजियम की भेंट दी है । इस वर्ष इसे ५ वर्ष पूरा होते पंचम वार्षिकोत्सव मनाया गया था । प्रत्येक वर्ष म्युजियम के पाटोत्सव के दिन म्युजियम में श्रीजी महाराज के तीनो अपर स्वरुपों के सानिध्य में अभिषेक तथा महापूजा का कार्यक्रम संपन्न किया जाता था । परंतु इस वर्ष पूरे होने से बड़ा कार्यक्रम किया गया था । प्रत्येक वर्ष की तरह म्युजियम में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति का अभिषेक तथा समूह महापूजा तो किया ही गया था, परंतु अहमदाबाद के ग्राम्य विस्तार अर्थात् ओंगणज विस्तार में आये हुए गोपी फार्म पर दिव्य विशाल सभा का आयोजन किया गया था । अनेकों गाँव से तथा देश-विदेश से संत-हरिभक्त इस सभा में उपस्थिति थे । विशाल सभा में इतने अधिक लोग हो गये थे कि केवल मस्तक सभी का दिखाई दे रहा था । सर्व प्रथम स्टेज पर एल.ई.डी. स्क्रीन पर म्युजियम का तथा उसके भीतर स्थलों का दर्शन करवाया गया था । श्रीहरि के तीनों अपर स्वरुप स्टेज के मध्य में विराजमान हुए थे । इसके बाद कालुपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा अन्य संतो द्वारा उद्बोधन किया गया था । जिस में श्री नरनारायणदेव की तथा श्रीहरि की वस्तुओं की महिमा सुनाई गई थी । इसके बाद यमजानो का सन्मान किया गया था । इससे पूर्व जिसके रग रग में श्री स्वामिनारायण म्युजियम है ऐसे श्री करशनभाई राघवाणी तथा म्युजियम की सम्पूर्ण व्यवस्था को बड़ी सूक्ष्मता से देखने वाले श्री दासभाई को स्वयं प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा साफा बांधकर सन्मानित किया गया था । म्युजियम की प्रत्येक वस्तु को शास्त्र के प्रमाणानुसार तथा म्युजियम में आयोजित प्रत्येक आयोजन में महत्व का योगदान करने वाले प.पू. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा प.पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी को प.पू. बड़े महाराजश्रीने सन्मानित किया था । इसके बाद सभी लोग भोजन कक्ष में जाकर भोजन का प्रसाद ग्रहण किये थे । सभी का यह दिन बड़ी दीव्यता के साथ बीता । सभी संतोष एवं धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मार्च-२०१६

रु।.५१,०००/-	श्री रघुवीरभाई नवीनचंद्रभाई अमीन – नवरंगपुरा।
रु।. २५,०००/-	श्री रोहितभाई प्रहलादभाई पटेल – भाउपुरा
रु।. ११,०००/-	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल वाली के हरिभक्त – मुंबई वालों की तरफ से
रु।. ११,०००/-	श्री अरविंदभाई दोंगा – बापूनगर
रु।. ११,०००/-	श्री लालजीभाई माधवजीभाई पिंडोरिया – मांडवी
रु।. ६,०००/-	अ.नि. दूधीबहन मोहनभाई पटेल – अमदावाद
रु।. ५,०००/-	अक्षर ट्रेडर्स कृते कीर्तिभाई – मोरबी
रु।. ५,०००/-	श्री दिलीपभाई लवजीभाई – दियोदर
रु।. ५,०००/-	श्री नैया संजयकुमार पटेल – साबरमती – संकल्प पूर्ण होने पर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मार्च-२०१६)

ता. ०२-०३-२०१६	श्री विहान प्रीतेश ओमप्काश काशव कृते पी.पी. स्वामी (छोटे) एडीलेड-ओस्ट्रेलीया
ता. ०६-०३-२०१६	साकरबहन आत्माराम पटेल – शाहपुर कृते विनोदबाई
ता. ०७-०३-२०१६	श्री घनश्यामदास सोमदास पटेल (दलाल – डांगरावावाला) कृते पी.पी. स्वामी (छोटे)
ता. ०११-०३-२०१६	श्री स्वामिनारायण म्युजियम का पांचवाँ वार्षिकोत्सव एवं महापूजा। मुख्य यजमानश्री जशवंतलाल कांतिलाल मोदी परिवार
ता. १३-०३-२०१६	श्री जोईतारामभाई धनजीभाई पटेल – घाटलोडिया कृते बलदेवभाई, विष्णुभाई तथा जयंतीभाई
ता. १५-०३-२०१६	श्री नारणभाई चुनीलाल पटेल – राणीप
ता. २०-०३-२०१६	श्री कांतिभाई भगवानदास पटेल – देउसणावाला चि. जयेन्द्रभाई के विवाह के निमित्त कृते पी.पी. स्वामी (छोटे)
ता. ३१-०३-२०१६	श्री मावजीभाई पिंडोरिया (लंडन)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सब कुछ लाली ती तरह

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान के पास प्रसंगानुसार सुराबापू को ब्रह्मानंद स्वामी इत्यादि संत कथा सुनाते । इसमें कुछ बातें भगवान को सुप्रस करने की होती, कुछ बातें किसी रहस्य विशेष पर होती । उसमें भी जब ब्रह्मानंद स्वामीजी कथा करते तब सत्य, तथ्य के साथ हास्य से भरी होती । एकबार ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा कि हे महाराज ! संसार में एक कहावत है कि ''जगत के जीव को सब कुछ लाली के जैसा होता है'' । यह सुनकर महाराजने कहा, स्वामी ? ऐसा नहीं है । ऐसा कभी नहीं सुने । आप सुनाइये तो ख्याल आये । ब्रह्मानंद स्वामीने कहा कि महाराज ? जिस वात को आप सुने नहों और हमें सुनाना हो तो इससे बड़ा आनंद और क्या हो सकता है । ऐसा कहकर स्वामीने वात करना प्रारंभ कर दिया ।

किसी गांव में कोई सद्‌गृहस्थ पति-पत्नी रहते थे । उन्हें मात्र एक पुत्री थी । पुत्री का नाम लाली रखा । वे दोनो लाली से बहुत प्रेम करते । खेलाते, नहवाते, कपडे पहनाते, खर्च करना होता तो मंहगाई होते हुए भी कहते लाली की तरह खर्च करेंगे । भाई ! आज पचास रुपये खर्च हो गए । इसमें क्या ? लाली के जैसा ही तो है न; एक दिन लाली के लिये कपड़ा खरीदने गये, वहाँ पर कोई जेब काट लिया । दो सौ रुपये चले गये । कोई वात नहीं, लाली के जैसा । वह दुःख नहीं हुआ, लाली की तरह । अपनी एक ही लाली है न । लाली बड़ी हो गई, लाली की माता को ऐसा हुआ कि अब लाली का विवाह करना है, इसलिये लाली के लिये गहना बनवाये । एक पेटी में उसे बंद करके रख दिये । कपड़े भी सभी उसके अनुकूल लाकर, उसे भी उसी पेटी में रख दिये । लाली के विवाह प्रसंग पर यह सब लाली को देंगे ।

मनुष्य कुछ सोचता है, और होता है कुछ और । किसी अकस्मात में लाली की मृत्यु हो जाती है । माता-पिता दोनो रोते ही रहते । सभी लोग उन्हें आश्वासन देते, आप क्यों रोते हैं ? लाली तो स्वर्ग में गई । वह बहुत पवित्र थी, बहुत अच्छी थी, इसलिये वह स्वर्ग में ही जायेगी । इसलिये चिंता मत कीजिये । वह वहाँ सुखी है । लाली की मां पूछती, मेरी लाली सुखी तो होगी न ? अरे, वह आनंद करती होगी । स्वर्ग में किसी वात का दुःख नहीं होता । वहाँ सब कुछ मुफत में मिलता है । उसे कुछ भी दुःख नहीं ।

एकदिन उपरोक्त सभी स्थिति का जानकार ठग आया । आप कौन है ? मैं चारो तरफ धरती पर धूमता हूँ, स्वर्ग में भी जाता हूँ । आप स्वर्ग में भी जाते हैं ? वहाँ पर मेरी लाली भी गई है । हाँ मुझे पता है, वही हमें भेंजी है । ओ हो ! हमारी लालीने आपको भेंजा है ? हाँ, वही आपके घर का पता दी है, अन्यथा हमें कैसे ख्याल आता । तो मेरी लालीने क्या कहा है ? लाली यह कहा है कि स्वर्ग में खाने-पीने की कोई तकलीफ नहीं है लेकिन वहाँ जैसा स्वर्ग में आभूषण नहीं बनता, यहाँ सभी लोग मोटे-मोटे आभूषण पहनते हैं । उसने यह भी बताया है कि मेरे लिये मेरी मांने आभूषण बनवाकर रखे हैं, उसे आप लेते आईयेगा । उसी के लिये मुझे भेंजा है । यह सुनकर वह माता खुश हो गई । घर में लाली के लिये जो गहना, कपड़ा बनाकर जिस पेटी में रखी थी वह पेटी ही उस ठग को दे दी । और उसने कहा कि यह सबकुछ आप ले जाकर मेरी लाली को देदीजियेगा । वह ठग पेटी मस्तक पर रखा और तुरंत ही वहां से रफूचक्कर हो गया । कुछ समय बाद पति आये । क्यों आज खुश दिखाई दे रही हो ? अरे ! आप भी बात सुनकर खुश हो जायेंगे । सम्पूर्ण उपरोक्त बात बतादी । पति सुनते ही अरे रे..... बड़ा गजब कर दिया तूंने । कभी कोई स्वर्ग में से आता है क्यां ? यहाँ से इस तरह कोई वस्तु जाती है क्या ? वह ठग तुम्हें ठग दिया । कोई बात नहीं, वस्त्राभूषण की पूरी पेटी लाली के जैसे चली गई ।

लेकिन उस भाई को हुआ कि मैं उस ठग को पकड़ लूं । अभी नजदीक में होगा । कारण कि उस जमाने में स्कूटर नहीं था । गाड़ी नहीं थी । अगल-बगल में ही होगा । एक घोड़ा लेकर सवारी करके गाँव से बाहर निकला । थोड़ी दूर ही गया था, फोड़े पर सवार आते हुये को देखकर ठग के मन में हो गया कि यह मेरा ही पीछा करते आ रहा है, इस लिये वह ठग एक पेड़ पर चढ गया । वह भाई कहने लगा कि अब तूं मेरे हाथ से नही बच सकता । हमारे घर के लोगो को ठग कर भाग रहे हो । आज तुझे दंड तो देंगे । नीचे उतर ठगने कहा कि नीचे नहीं उतरुं । नहीं उतरेगा तो कहाँ जायेगा ? घोड़ा को खड़ा करके ठग को पकड़ने चढा, उधर ठग ऊपर से घोड़े के ऊपर कूदकर चढ गया और घोड़े को भी लेकर बाग गया । वह भाई

निराश होकर घर आया, पत्नी ने पूछा क्या हुआ ? ठग पकडाया ? नहीं, वह पकड़ा नहीं, बल्कि अपना घोड़ा भी लाली की तरह ले गया।

इस द्रष्टांग से ब्रह्मानंद स्वामी समझाना चाहते हैं कि – इस संसार के जीव का सम्पूर्ण जीवन लाली की तरह बीतथा है। आप विचार करें कि ''प्रति महीने की इनकम की लीस्ट एकत्रित करके वर्ष भर में कितना कमाये ? वह कहाँ गया ? कुछ भी खबर नहीं पड़ती।इसका कोइ हिसाब नहीं है। ध्यान रखियेगा । संपत्ति का उपयोग करना, तथा संपत्ति का दुरुपयोग करना दोनो अलग वस्तु हैं।आपके प्रयत्न से अथवा ईश्वर की कृपा से आप को कुछ भी मिला है उसका सदुपयोग कुटुंब निर्बाह तथा सत्कर्म के लिये हो तो ठीक। उसे संपत्ति का उपयोग कहा जायेगा। यदि संपत्ति का मौज-शौख के लिये, भोग-विलास, व्यसन के लिये किया जाय तो लाली के जैसा कहा जायेगा। ऐसा ही होगा, पेटी भी जायेगी और घोडा भी जायेगा। श्रीजी महाराज ब्रह्मानंद स्वामी से कहते हैं कि स्वामी ! आप बड़ी अच्छी बात कहे हैं।

मित्रो ! आप सभी को यह बात अच्छी लगी होगी । यह वात याद रखना कि भगवान की कृपा से ऐसी अमूल्य मानव जिंदगी मिली है वह लाली की तरह खत्म न हो जाय इसकी सावधानी रखनी चाहिए। सत्कर्म, परोपकार तथा इष्टदेव की भजन करके जीवन को सफल बना लेना चाहिए।

•

कृपापात्र बनने के लिये

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

किनारा का गाँव हो, दूर-दूर तक पानी के लिये दौड़ धूप करनी पडे। यह जिसके जीवन हो वहाँ इस पीड़ा को समझ सकता है। इसी तरह का एक गाँव जहाँ पर पीने के पानी की भयंकर समस्या थी। इस लिये गाँव के लोगों ने कूआं बनाने का विचार किया। सुखी लोग आर्थिक सहयोग किये तथा युवानोने शारीरिक सहयोग दिया कूंआ खोदने का काम चालू हो गया।

कई महीने तक अविरत परिश्रम करने के बाद परिणाम स्वरुप कूएं में पानी निकला। गांव में आज आनंदका दिन था । गाँव में उत्सव जैसा माहोल दिखाई दे रहा था। छोगे बालक से लेकर वृद्ध तक सभी लोग कूएं के पानी को देखने आये। गांव के मुखिया गाँव के उपरोहित को साथ लेकर आगे चल रहे थे। पांच कुंवारी कन्या थाली में पुष्प-गन्ध-अक्षत लेकर पीछे-पीछे चल रही थी । उनके पीछे गाँव की बहने, बड़े-बड़े.... इस तरह सभी उस कूंये के पास आ पहुंचे बहने मंगल गीत गाने लगी।

गाँव के उपरोहित ने ग्राम मुखिया के हाथ से कूयें का पूजन करवाया, मंगल श्लोक पढे, वरुण देवता का पूजन किया गया । कूयें के ऊपर नारियल तोडा गया । कुंवारी कन्याओं के हाथ से प्रथम कूंये का जल निकलवाया गया। बीच में घडा रुक गया।

सभी आश्चर्य में थे। कुछ वृद्ध कूंआ के पास आकर देखे तो उसमें से आवाज आ रही थी। सभी कान लगाकर आवाज सुनने का प्रयास करने लगे कूंआं घडा से कह रहा था खबरदार तूं मेरे पानी का स्पर्श नहीं करना। मेरा निर्मल जल मेरे लिये ही है। तूं मुझे अपने में भरकर बाहर फेंक देता है। बाद में मैं खाली हो जाऊँगा। इसलिये तूं मुझे स्पर्श मत करना । कूआंने कहा कि इतने महीनों के श्रम के बाद जल मिला है, वह तुम्हारे लिये नहीं यह जल हमारी सम्पत्ति है। पानी मेरी शोभा है। इसमें से तूं एक बूंद भी लिया तो तेरी खैरीयत नहीं।

घड़ाने इस वात को बड़ी शांति से सुन लिया । लेकिन शांति से कहा कि कूआं भाई ? आपकी वात सही है कि जल ही आपकी शोभा है । आप की संपत्ति है । इसलिये हम आपका विरोधनहीं करते लेकिन हमारी एक बात अवश्य याद रखना कि आपका जल बाहर निकलेगा नहीं लोग इसे पीयेंगे नहीं तो आपका यह जल गन्धा जायेगा । जब तक आपका पानी बाहर नहीं आयेगा तब तक आपको शुद्धजल नहीं मिलेगा। यदि आप पृथ्वी केइस जल को लोगों को पीने के कार्य में दोगें तो तुम्हारे भीतर निरन्तर पानी का श्रौत बहता रहेगा। जितना आप दूसरे को दोगे उतना आपको दूना मिलता रहेगा । आप मना करते हो तो हम आग्रह नहीं कर सकते, लेकिन हमें दुःख इसका है कि आपके पानी की उपयोगिता न होने पर आपका पानी दुर्गन्धवाला हो जायेगा।

घड़े की यह वात कूआं के मन में बैठ गई। अब कूआं ने घडे को पानी भरने की अनुमती दे दी। घड़ा पानी लेकर बाहर आया। सभी को पानी की प्राप्ति हुई सभी आनंदित हुये।

प्रिय मित्रो ! इस वात से यह ज्ञान मिलता है कि अपने पास जो भी ज्ञान हो, जिससे समाज का उत्कर्ष होने वाला हो उस ज्ञान को समाज में बांटना याहिये । अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि ''जो विद्या आप पढे हों उसको दूसरे को पढाइयें।'' ज्ञान सुपात्र में न दिया जाय तो रुके हुये पानी की तरह दुर्गन्धमारने लगेगा। समाज के सुख के लिये, कल्याण के लिये सत्संग तथा भक्ति का प्रचार करना चाहिए। जो व्यक्ति में समाज में इष्टदेव की भक्ति उपासना रहेगी तो जिस लोक तथा परलोक में सदा सुख बना रहेगा। भगवान की कृपा बनी रहेगी।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "ज्ञानी किसे कहा जाय"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जो व्यक्ति सत्य असत्य के भेद को अच्छी तरह समझ सके उसे ज्ञानी कहा जायेगा । जिस तरह पानी तथा दूधदोनो एक साथ हो तो ऊपर से ख्याल नहीं आयेगा । लेकिन हंस के भीतर ऐसा गुण है कि पानी को पानी तथा दूधको अलग करे देता है - इसी को नीरक्षीर विवेकी कहा गया है । जिस तरह हंस दूधऔर पानी को अलग कर सकता है उसी तरह ज्ञानी व्यक्ति भी जड और चेतन के भेद को समझ सकता है । शरीर तथा जीवात्मा देखने से एक लगते हैं । आत्मा अपने अन्दर है । हम उसे देख नहीं सकते । लेकिन अनुभव कर सकते हैं । दोनो में भेद है । आत्मा अविनाशी है, शरीर मूल्यवान है । कठोपनिषद की बात है - नचिकेता तथा यमराज की । नचिकेता के पिताकी ऐसी प्रतिज्ञा थी कि जो हमारा सर्वस्व है उसका दान करदूं । नचिकेता अपने पिता से कहता है कि सर्वस्व में तो मैं भी आ गया । यह सुनकर पिताको क्रोधआगया और पिताने पुत्र का दान मृत्यु को करदिया । नचिकेता तीन दिन तक यमराजा के द्वार पर खडे रहे । यमराज प्रसन्न हो गये और नचिकेता से तीन दिन तक प्रतिक्षा के हेतु तीन वरदान मांगने को कहते हैं । नचिकेता ने कहा कि हमारे पिताजी क्रोधके कारण हमारा दान कर दिये, अब उन्हें पश्चाताप हो रहा है, आप उनके इस दुःख को दूर करें । दूसरा-स्वर्ग में रहने के लिये यज्ञ-दान-तप करना हो ता है । इस विषय को समझाइये । तीसरा - वरदान यह दीजिये कि मृत्यु के बाद आत्मा का क्या स्वरुप होता है ? यह सब हमें समझाइये । यह सुनकर यमराज ने कहा कि हम आपको जगत की सभी वस्तुयें देते हैं । लेकिन आत्म तत्व के विषय में मत पूछो । यह सुनकर नचिकेता को विचार आया कि जिसके बदले में यमराज जगत की सम्पूर्ण संपत्ति देने को तैयार हैं तो वह आत्मतत्व कितना मूल्यवान होगा । नचिकेताने कहा कि जगत का ऐश्वर्य तो मेरी दृष्टि के सामने ही नष्ट हो जायेगा । यह सुनकर यमराजा प्रसन्न हो गये आत्म तत्व की वात किये । आत्मतत्व व्यापकभी है और आकाश भी सूक्ष्म भी है । सभी के भीतर आत्मा एक समान है । सभी के भीतर आत्मा का स्वभाव भी एक जैसा है । सभी के आत्मा का स्वभाव एक जैसा है और सभी की आत्मा एक समान हो तो सभी के कार्य एक जैसा होना चाहिये न ? परंतु ऐसा होता नहीं । क्यों नहीं होता ? इसका एक सरल उदाहरण है - जिस तरह बिजली हीटर को गरम करती है, फ्रीज ठंडा करती है । बाहर से नीला-पीला-लाल तथा बादली कलर वाला वायर दिखाई देता है । परंतु प्रत्येक मे से बिजली जाती है, सभी एक समान होती है । तो अलग-अलग क्यों ? यह सब मसीन के ऊपर आधारित है । फ्रीजी में ऐसी मशीन है जो ठन्ढक करती है । हीटर में ऐसी मशीन होती है जो गरम करती है । इसी तरह हम सभी मनुष्य एक जैसे हैं, आत्म तत्व भी एक जैसा है फिर कार्य अलग-अलग क्यों ? इसके कारण यह है कि पूर्व के आधार पर सूक्ष्म शरीर के आधार पर जो विचार आता है, मनुष्य वैसा कार्य करता है । जिस व्यक्ति को आत्म तत्व की पहचान हो जाती है वह व्यक्ति सुख-दुःख से परे हो जाता है । समस्थिति में रहना सीख जाता है । इस तरह आत्म तत्व का जिस व्यक्ति को बोधहो जाता है उसे पारसमणी मिल गई हो ऐसा कहा जाता है । जैसे कोई व्यक्ति व्यवसाय में लगा हो उसे पारसमणी मिल जाय तो उसे व्यवसाय में हानि होने पर या लाभ होने पर ्सर नही होती । क्योंकि उसके पास पारसमणी है । इसी तरह जिसे आत्मतत्व का बोधहो गया है उसे किसी भी परिस्थिति में दुःख या सुख नहीं होता । यहाँ तो महाराज ने हम सभी के प्रारब्धको सुधार दिया है । मान-

सन्मान-टेन्शन जो भी आता है वह थोड़े समय के लिये आता है। इस लिये सुख आने पर आनन्दित नहीं होना चाहिए, कोई अपमान करे तो दुःखी भी नहीं होना चाहिए। कितनी बार ऐसा होता है जो व्यक्ति अपना सन्मान करता है वही बाहर जाकर खराब बोलता है ऐसे देखा जाता है। कभी सामाजिक कार्य में जाते हैं, वहां पर बड़े आदमी को कुर्सी-मंच या आगे बैठाया जाता है - वहि सुख इस जगत का है। यह स्थाई नहीं है। यदि हम आत्मतत्व के चिन्तन में रहेंगे तो अन्तःकरण के शुध्ध हो जाने पर परमात्मा के चरण में बैठने को मिलेगा। इस सुख को दुनिया में कोई छीन नहीं सकता। यह सुख स्थाई है, इसका सदा ध्यान रखना चाहिए।

●

शांति

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

शांति अर्थात् क्या ? मात्र आवाज का न आना शांति कहते हैं ? निरवता को शांति कह सकते हैं ? नहीं, शांति को वह है जो बाहय-आभ्यान्तर के उत्पात को शांति करे। दो व्यक्ति के आपस में न बोलना शांति नहीं कहा जायेगा। उलूक के मौन को शांति नहीं कहा जायेगा। शिक्षक के डर से वर्ग में बैठे विद्यार्थीयों का मौन शांति नहीं कहा जायेगा। करफ्यू से सूमसान रोड को शांत नही कहा जायेगा।

शांति तो वह है जो हृदय को गाने वाला बना दे। मंदिर में बोली जानेवाली श्रीहरि की धुन-प्रार्थना, आवाज होते हुए भी शांति कही जायेगी ? दो व्यक्ति आपस में बात न करने वालों को साथ में बात करना शांति कहा जायेगा। शांति कोई स्मशान की स्बव्द्धता नहीं है। शांति तो स्वरुकी दुनिया में आनेवाली क्रांति है। शांति वह है कि अपने इष्टदेव के ध्यान मात्र से चेहरे पर क्रांति क्रांति हो जाय।

एकबार गढपुर में श्रीहरि विराजमान थे। मुक्तमुनि महाराज के पास जाकर कहे कि महाराज ? शांति मिले ऐसी वात कहिये न य इसलिये महाराजने अपने प्रागट्य से लेकर गढपुर पधारने तक की सभी वातें बताकर चुप हो गये। मुक्तमुनिने पुनः महाराज से कहा, शांति मिले ऐसी वात कहिये न ?

महाराजने पुनः वही वात की। मुक्तमुनिने तीसरी बार वही प्रश्न किया। अब श्रीहरि नाराज हो गये और कहे कि आपको अहमदाबाद हरिभक्त बुलाये हैं। वहाँ आप जाइए। आदेश एकाएक हुआ, स्वामी कुछ समझ नहीं पाये। महाराज को प्रणाम करके चल दिये। परंतु गोपालानंद स्वामी तथा नित्यानंद स्वामी की इसकी खबर मिल गई। दोनो महाराज के पास आये और कहे कि एकाएक मुक्त स्वामी को अहमदाबाद क्यों भेंज दिये। महाराजने कहा कि हमने अपने चरित्र को दो बार सुनाया फिर भी उन्हें शांति नही मिली इसलिये अमदावाद भेंज दिया। वहाँ जाकर आम्रफल खाइये और आपको शांति मिल जायेगी। यह सुनकर दोनो संत मुक्तमुनि के पास गये और कहने लगे कि प्रभु के चरित्र को सुनने से या सुनाने से शांति मिलेगी। आप इन वात को क्यों नहीं समझे।

यहसुनकर मुक्तानंद स्वामी समझ गये। महाराज की आज्ञा से वापस आये अपनी भूल स्वीकार लिये। अब महाराजने मुक्त स्वामी को जीवन पर्यंत चरित्रों की रचना करने की आज्ञा करदी। इसका उल्लेख वचनामृत के गढडा के मध्य प्रकरण ५८ में किया गया है। शांति का मतलब हृदय का स्मित। शांति अर्थात् श्रीहरि की ईच्छा। शांति अर्थात् प्रेमथी मातृभाषा, शांति अर्थात् मौन की माता। युद्ध के बीच में विराम को शांति नहीं कहा जायेगा। शांति तो समय के बाग का वसंत है। शांति बालक की खिलखिलाहट में है। शिक्षापत्री के अक्षरों में शांति है। शांति आचरण है।

सच्चे संतो का सत्संग पंच विषयों से अलग करके शांति प्रदान करता है। भगवान सभी सुख के राशी हैं। जीव उस परमात्मा के समीप जायेगा तो उसे शांति मिलेगी। भगवान की मूर्ति में एकटक दर्शन में शांति हैं। शांति की चाहना वाले को सांसारिक सुख साधनो में कभी शांति नहीं मिल सकती। यह सुख नहीं है, मात्र सुखा बास है। सच्चा सुख तो भगवान के चरण में धर्मवंशी के आश्रय में है। संतो के सामीप्य में है। इस सामीप्य को पाने के लिये सद्ग्रंथो का चिन्तन आवश्यक है। शांति प्रार्थना का प्राण है। शांति प्रभु को प्यारी है, इसी लिये भगवान स्वामिनारायण के उद्देश का सदा ख्याल रखने में शांति है। शांति के आने पर ही श्रीहरि आयेंगे। शांति होने पर भ्रांति दूर होती है, शांति प्रभु को प्रकारती है।

श्री स्वामिनारायण

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९४ वाँ पाटोत्सव महोत्सव

विश्व का श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सर्वोपरि श्रीहरिने स्वयं अपनी बाहों लेकर प्रतिष्ठित जिन्हे किये वे श्री नरनारायणदेव है, जिनका १९४ वाँ पाटोत्सव महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर ता. ७-३-१६ से ता. ११-३-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता पू. स.गु. शा.स्वामी निर्गुणदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । सुंदर यज्ञ विधिमें प.भ. भगवानभाई नागरबाई आदि यजमान परिवारोने अलौकिक लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया। फाल्गुन शुक्ल-३ को पाटोत्सव के प्रसंग पर देवों को पूजन अर्चन की विधिब्राह्मण द्वारा करवाई गयी थी।

प्रातः ६-३० बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों के वरद हाथ से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव, श्री धर्मदेव-भक्तिमाता-श्रीहरि कृष्ण महाराज श्रीराधाकृष्णदेव का षोडषोपचार से पूजन-अभिषेक किया गया था । वर्ष में एक ही बार इस तरह दर्शन का योग होने से दर्शनार्थियों की इतनी भीड हो गई कि कहीं पैर रखने की जगह नहीं थी।

प्रसादी के सभा मंडप में प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री जब विराजमान हुये उस समय पाटोत्सव के यजमान अ.नि. पू. स.गु. स्वामी श्रीहरिदासजी स्वामी स्वयं प्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल की प्रेरणा से खाखरिया विसतपुरा अ.नि. प.भ. पटेल नागरभाई गोरधनभाई पटेल चंचलबहन नागरबाई पटेल वसंताबहन के शुभ संकल्प से उनके परिवारने इसका सुंदर लाभ लिया था। जिस में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्रीने पूजन-आरती की थी।

प्रासंगिक उद्बोधन में संतो मेंस .गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, मूली के महंत स्वा. श्यामसुंदरदासजी, कांकरिया के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी ने श्री नरनारादणदेव की महिमा का गुणगान किया था।

अन्त में समस्त सभा को प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद देते हुये कहा कि सभी भक्तजन श्री नरनारायणदेव के साथ एकात्मभाव तथा एक निष्ठा रखेंगे तो कल्याण निश्चित होगा।

सभा संचालन का कार्य शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने किया साथ में शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी भी संचालन का कार्य सम्हाल रहे थे। इस प्रसंग का सभी को दर्शन हो इसलिये एलसीडी लगाई गई थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट की आरती उतारकर भक्तों को दर्शन का लाभ दिये थे।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव संपन्न

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के विशाल चौक में पांचसो परमहंसो तथा हरिभक्तों के साथ फूलोदोलोत्सव की लीला की थी। सभी को रंग से तरबोर दिया था। पाल्गुन शुक्ल-१५ ता. २३-३-१६ को प्रसादी के चौक में श्रीहरिके ८ वें वंशज भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री सुंदर श्वेत वस्त्र धारण करके सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर रंग खेलने के लिये चौक में पधारे थे। जहाँ पर शहर तथा गाँवों से पधारे हुये हजारों हरिभक्तों को तथा संतो को रंग से रंग दिये थे । इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से उन्हीं के संत मंडल जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, मुनि स्वामी इत्यादि संतो ने खूब सुंदर व्यवस्था की थी। इस फूलदोलोत्सव के यजमान स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी की प्रेरणा से प.भ. घनश्यामभाई शाह परिवार ने सुंदर लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाया था। प.पू. लालजी महाराज उनके ऊपर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का पांचवा वार्षिकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण

म्युजियम का पांचवा वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । उत्सव से पूर्व श्रीहरि के तीनों अपर स्वरुपों ने अपने हस्ताक्षर वाली पत्रिका को सभी त्यागी-गृही को प्रेषित किये थे ।जिससे बड़ी संख्या में सत्संग समाज एकत्रित हुआ था ।

इस प्रसंग पर फाल्गुन शुक्ल-३ को दोपहर में २-३० से ४-३० तक म्युजियम के मौन मंदिर के पीछे वाली विशाल जगह पर प.पू. महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में समूह महापूजा का आयौजन किया गया था । स्टेज के ऊपर श्रीनरनारायणदेव को पधराकर इन्हीं महाप्रभु के सामने ३०० जितने भक्तों ने महापूजा का लाभ लिया था । सायंकाल ५ बजे से ७-०० बजे तक गोपी पार्टी प्लोट में सभा तथा भोजन की व्यवस्था की गई थी । इस प्रसंग में अनेक धामों से १५० जितने संत पधारे थे । दिव्य वातावरण में कीर्तन भजन के साथ विद्वान संतो ने म्युजियम तथा धर्मकुल की महिमा समझाई थी .

उत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. कांतिलाल मोतीराम मोदी परिवार के श्री जशवंतभाई के साथ अन्य छोटे-बड़े यजमानों का तथा अहमदाबाद छोटे-बड़े सभी मंदिरो के कोठारियों का सन्मान किया गया था । म्युजियम के लिये जिसका सम्पूर्ण समर्पण है ऐसे दासभाई तथा प.भ. करशभाई का प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने हाथों से साफा बांधकर पुष्पमाला पहना कर आशीर्वाद दिया था ।

प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजीने बहनो के विभाग में दर्शन का सुख प्रदान की थी । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी उत्सव लक्ष्य चेनल पर लाईव टेलिकास्ट किया गया था ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापूनगर वार्षिक पाटोत्सव के साथ नूतन प्रवेश द्वार का उद्‌घाटन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी के प्रेरणा से मंदिर में बिराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज का ११ वाँ वार्षिकोत्सव तथा नेशलन हाईवे नं. ८ की तरफ से नूतन मुख्य प्रवेश द्वार उद्घाटन महोत्सव ता. १२-३-१६ से ता. १६-३-१६ तक भव्यता से मनाया गया था ।

यजमानो के सहयोग से ११ सभाओं का आयोजन यहाँ के सोसायटियों में किया गया था ।८०० जितने हरिभक्त धुन-कीर्तन किये तथा संतो के अमृतवाणी का लाभ लिये । ५०० जितने संत-हरिभक्त एप्रोच मंदिर से जेतलपुर तक पदयात्रा करके रेवती बलदेवजी का दर्शन किये । इसी तरह एप्रोच मंदिर से म्युजियम तक पदयात्रा का आयोजन किया गया था । म्युजियम में प.पू. बड़े महाराजश्री का सभी ने आशीर्वाद प्राप्त किया ।

महोत्सव के अन्तर्गत मंदिर के को. स्वामी पू. हरिकृष्णदासजी ने कथा की थी । पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में १२-३-१६ को समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । ता. १६-२-१६ को प्रातः पू. संतोने श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक करवाया था । प.पू. महाराजश्री नूतन द्वार का उद्‌घाटन करके अन्नकूट की आरती किये थे । सभा समापन पर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।इस प्रसंग पर नाना धर्म स्थानों से संत पधारे हुये थे ।

प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी तथा प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर सभी को सुख प्रदान किये थे । ब्लड डोनेशन केम्प; रात्री सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भोजन की व्यवस्था की गई थी । मंदिर के कोठारी श्री रमेशभाई ने श्री नरनारयणदेव युवक मंडल के साथ रहकर योग्य सेवा की थी। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांरिया पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज तथा कष्ट बंजनदेव की असीम कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से टाकुरजी का वार्षिक पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन एवं कथा पारायण धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. ७-३-१६ से ता. १३-३-१६ तक निष्कुळानंद स्वामी रचित श्रीमद् भक्तचिंतामणी ग्रंथ का सप्ताह पारायण स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) एवं स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में पधारे थे । यजमान का सन्मान करके हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । यहाँ पर विराजमान कष्टभंजन देव की महिमा बताकर ठाकुरजी की आरती उतारे थे । बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी ।

पुजारी देव स्वामीने ठाकुरजी को प्रतिदिन नये वस्त्र

पहनाकर भक्तों को दर्शन का लाभ देते थे । यहाँ के ब्रह्मभोजन में पधारे हुये संत तथा ब्राह्मण बोजन करके दक्षिणा स्वीकार किये थे । पूरे दिन बोजन का कार्यक्रम चालू ही रहा । कांकरिया मंदिर पाटोत्सव के उपलभ्य में कांकरिया मंदिर से जेतलपुर धाम तक पदयात्रा निकाली गई थी । (जिज्ञेशभाई - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में लधुरुद्रयाग

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में माधकृष्ण-१३ महाशिवरात्री को लधुरुद्रयाग अनुष्ठान का आयोजन किया गया था । आयोजन प.भ. महेन्द्रभाई लालभाई पटेल परिवार की तरफ से किया गया था ।

यज्ञ समापन में शा. माधव स्वामी, महंत स्वामी, ट्रस्टी दशरथभाई, घनश्यामभाई, राजूभाई इत्यादि हरिभक्त उपस्थित थे । करीब ४ वर्ष से महादवे की प्रसन्नता के लिये यह प्रवृत्ति चल रही है। (को. मयूर भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया ९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २०-३-१६ को श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में विराजमान ठाकुरजी का ९ वाँ पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न किया गया था ।

इस उपलक्ष्य में रात्री कथा शा, हरिॐप्रकाशदासजी तथा चैतन्य स्वामीने की थी । प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में सभी को श्रीनरनारायणदेव में अटूट श्रध्धा-निष्ठा रखने की वात की थी । सि अवसर पर-अमदावदा, छपैया, ईडर, कलोल, गांधीनगर, बापूनगर, सोकली इत्यादि स्थानो से संत पधारे थेस्त्र ।

पाटोत्सव के यमजान श्री अरविंदभाई सोमाभाई पटेल परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । (चेतन पटेल - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर ता. ६-७-१६ से ता. १२-३-१६ तक प.भ. डाहीबा नरसिंहभाई पटेल के शुभ संकल्प से तथा उनेक पुत्र के स्मरणार्थ श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन किया गाय था । जिस के वक्ता स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी थे । पूर्णहुति के प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी, गांधीनगर के महंत स्वामी पधारे थे । समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था । सभा संचालन भरतबाईने किया था ।

(को. जीवराजपार्क मंदिर)

दियोदर (बनासकांठा) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमदवादा मंदिर के महंत स्वामी के प्रेरणा से दियोदर तथा अगल बगल के गाँव में रहनेवाले भक्तों के सहयोग से बनासकांठा में अद्विदतीय मंदिर का निर्माण हुआ है ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. २-३-१६ से ६-३-१६ तक नाना विधकार्यक्रम किये गये ।

संप्रदाय के महान शास्त्र सत्संगीजीवन का स्वामी रामकृष्णदासजी द्वारा कथा का रसपान कराया गया । मंदिर निर्माण कार्य गाँवजनो के सहयोग से प.भ. दिलीपभाई धानाणीने किया था ।

उत्सव के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ता. ६-३-१६ को पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. गादीवालाजी पधारी थी, सभी को खुश होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

मंदिर निर्माण कार्य में पू. देव स्वा. (नारायणघाट महंत), श्री सतीषभाई इन्जीनियर इत्यादि लोगों का सहयोग था । महोत्सव में छोटे पी.पी. स्वामी, नारायणवल्लभ स्वामी, ब्र. राजु स्वामी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी इत्यादि संत मंडल पधारे थे ।

उत्सव में नाना धर्म स्थानो से संत पधारे थे । भाभर-थराद इत्यादि गाँवो के हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी ।

यहाँ के सत्संग को नवपल्लवित रखने के लिये पू. महंत स्वामीने छ संतो को नियुक्त किया । समग्र आयौजन के मूल श्रोत संत स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (को. कालुपुर) थे । सभा संचालन स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया । (कोठारश्री दियोदर)

गांधीनगर (से-२) में श्रीहरि बलगीता का त्रिदिनात्मक सत्संग पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा

पी.पी. (छोटे) स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (से-२) द्वारा ता. १५-२-१६ से ता. २७-२-१६ तक निष्कुलानंद स्वामी रचित ''निष्कुलानंद काव्य'' के अन्तर्गत ''श्रीहरि बलगीता'' शास्त्र की त्रिदिनात्मक कथा संपन्न हुई थी । इस कथा की वक्ता पू. सां.यो. भारतीबा (छोटी) थी अपनी सुमधर शैलीमें कथा का रसपान कराई थी ।

दूसरे दिन सां.यो. भारतीबा (बड़ी)ने काव्यमय शैलीमें रस से तरबोर कर दी थी ।

प.पू. गादीवालाजी ता. १७ को पधारी थी । परंतु वे श्री नरनारायणदेव महिला मंडल के ऊपर इतना प्रसन्न थी कि पहले दिन ही पदार्पण करने से (अर्थात् १६-२-१६ को) प्रसंग मे दीव्यता फैल गई । जिस तरह आकाश में तारो के बीच में चन्द्रमा की शोभा होती है इस तरह सुसोभित हो रही थी ।

श्री घनश्याम महोत्सव भी बड़ी दिव्यता से मनाया गया ।सभी बहने बड़े आनंद के साथ इस कार्यक्रम को मनाई ।

तीसरे दिन सां.यो. गीताबाने सुंदर सैली में कथा का रसपान कराई तीन दिन तक मोरबी तथा विहार सां.यो. बहने संगीतमय वातावरण बना दी थी ।

अन्त में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के वरद हाथों से कथा की पूर्णाहुति की गई थी । गादीवालाजीने अपने आशीर्वाद में सभी को भगवान के प्रति-संप्रदाय के प्रतिश्रध्धा-निष्ठा दृढ रखने की वात की और सर्वोपरि श्रीहरि आप सभी का सर्व विधकल्याण करें ऐसा आशीर्वाद भी दी थी । पूरे प्रसंग में मंदिर के महंत पी.पी. स्वामी का सुंदर मार्गदर्शन मिला था । मंदिर के हरिभक्त, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (से-२) कुमारी रुपबहन इत्यादि लोगोंने सुंदर सेवा की थी । प.पू. गादीवालाजीने यहाँ की श्री नरनारायणदेव महिला मंडल की ता. ११-१-१६ को स्थापना की थी । इतने थोड़े समय में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से बहनो का आर्थिक सहयोग पूर्णरुप से मिलता रहा । कथा के अवसर पर भगवान की कृपा प्रत्यक्ष भासित हो रही थी ।

(श्री नरनारयणदेव महिला मंडल गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महन्त स्वा. अखिलेश्वरदासजीके मार्गदर्शन में मोडासा शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ ।

इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग पंचदिनात्मक महा भागवत सप्ताह पारायण स.गु. महंत स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीके वक्ता पद पर संपन्न हुआ । दोनो समय भक्तों के भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई थी । इस अवसर पर अमदावाद, भुज, मूली, वडताल, गढपुर (जेतलपुर), जूनागढ इत्यादि धामों से संत आये हुये थे सभीने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था । ठाकुरजी की शोभायात्रा मोडासा शहर में निकाली गई थी । सभी ग्रामजन दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । इसी तरह प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा निकाली गई थी .

प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से देवों की प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त विधिसे की गई थी । विष्णुयाग तथा कथा की पूर्णाहुति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों सम्पन्न हुई ।

समग्र प्रसंग में सभी संत-सर्वेश्वरदासजी, पुजारी विश्वेश्वरदास, स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, विष्णु स्वामी इत्यादि संत तथा भोजनालय की व्यवस्था माधव स्वामी, मुक्तराज स्वामीने संभाली थी । स्वयं सेवकभाई तथा बहनो की सेवा प्रेरणारुप थी ।

महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी मकनसर, प्रेमप्रकाशदासजी हिंमतनगर महंतने सबा का संचालन किया था । साथ में शा. विश्वस्वरुपने भी सभा संचालन किया था । प्रासंगिक सभा में सभी हरिभक्तो को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों माला पहनाकर संमानित किया गया था ।

प्रासंगिक सभा में पधारे हुये संतो में शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, स्वा. पुरुषोत्तमप्रकादासजी (जेतलपुर), स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. वासुदेवानंदजी, स्वा. नारायणप्रसादासजी (मूली), स्वा उत्तमचरणदासजी (भुज) इत्यादि संतो की अमृतवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । रसोई की व्यवस्था मथुरा के महंत स्वामी की तरफ से की गई थी । संत पूजन की व्यवस्था को. सर्वेश्वरदासजी की प्रेरणा से वडु गाँव के हरिभक्तों नी की थी ।

समग्र प्रसंग में को. कांतिभाई प्रजापति, रजनीभाई, नारणभाई, अमरतभाई, रसिकभाई, हर्षिलभाई, हसमुखबाई, मुकेशभाई, जसुभाई पटेल, मोहनभाई,

चंद्रेशभाई, दिनेशभाई इत्यादि भक्तोंने सेवा की थी। मंडप सर्विस तथा साउन्ड एवं लाईटींग की सेवा वक्तापुर के हरेशभाई पटेल तथा जसवंतभाई पटेल की तरफ से की गई थी। अंतमें को. कांतिभाई प्रजापतिने आभार विधिकी थी।

(पुजारी–विश्वेश्वरदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) गुरु मंत्र महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) में ''गुरुमंत्र महोत्सव'' ता. ७-२-१६ रविवार को धूमधाम से मनाया गया था। जिस के यजमान श्री महेशभाई नंदुभाई पटेल कृते कौशलभाई (अडालज) परिवार था। ४७ गाँवो से करीब ४६३ जितने युवान गुरुमंत्र लेकर श्री नरनारायणदेव के आश्रित हुए थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

बहुत आश्रितों को कंठी प.पू. आचार्य महाराजश्रीने बांधी थी। सभा संचालन चैतन्य स्वरुपदासजीने किया था।

(को. गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. देवप्रकाददासजी (नारायणघाट महंत) तथा पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. बापूभाई लवजीभाई चौधरी के स्मरणार्थ तथा गं.स्व. पधीबहन बापूभाई चौधरी के शुभ संकल्प से श्री स्वामिनाारायण मंदिर भीमपुरा के ८ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीहरि गीता पंचान्ह पारायण ता. १६-२-१६ से २०-२-१६ तक धूमधाम से किया गया था। पाटोत्सव तथा पारायण के यजमान प.भ. दशरथबाई बापूभाई चौधरी तथा श्री अमरतभाई बापूभाई चौधरी परिवारने यह लाभ लिया था।

इस प्रसंग पर पू. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, सिद्धेश्वरदासजी, इत्यादि संत पधारे थे । अन्तिम दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और ठाकुरजी की आरती उतारकर समस्त संत-भक्तों को आशीर्वाद दिये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। (शा. चैतन्यस्वरुपदासज - गांधीनगर)

श्री हनुमानजी मंदिर राउता (वालीदेश) सुवर्ण कलश महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा वाली मंदिर के महंत स्वामी देवप्रसाददासजी तथा को. हरिप्रसाददासजी की प्रेरणा से वाली (राज.) प्रदेश के राउता गाँव में सर्व प्रथमवार प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण हुआ था। अ.नि. स.गु.स्वा. भक्तिनंदनदासजी द्वारा प्रतिष्ठित महाप्रतापी श्री हनुमानजी का मंदिर जीर्ण होने से यहाँ के शा.स्वा. विजयप्रकाशदासजीने जीर्णोद्धार करवाकर पपू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्राण प्रतिष्ठा तथा सुवर्ण कलश एवं ध्वजारोहण-मारुति यज्ञ इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था। इस प्रसंग पर वाली देश के हजारों हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।(महंत साधु प्रेमप्रकाशदास - हिंमतनगर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाणशीणा गांव में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वा. श्यामसुंदरदासजीकी प्रेरणा से मूली के अ.नि. पू. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी तथा पू. ध्यानी स्वामी की जन्म भूमि पाणशीणा में पुराना मंदिर जीर्ण होने से नूतन भव्य मंदिर का निर्माण होने से ता. ४-३-१६ से ८-३-१६ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर तथा संहिता पाठ में पुराणी घनश्यामप्रकाशदासजी तथा बालस्वरुप स्वामी थे। इसके साथ हरियाग, अन्नकूट, रात्री में सांस्कृतिक कार्यक्रम, व्याख्यान माला, नगरयात्रा इत्यादि प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे। ता. २-३-१६ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों टाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से की गई थी।

प्रासंगिक सभा में अनेक धाम से संत पधारे थे सभीने अपनी प्रेरक वाणी का लाभ दिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस अवसर पर सां.यो. बहनें भी पधारी थी । सभा संचालन मोरबी के महंत स्वा. भक्तिनंदनदासजीने किया था।

प्रसंग का सुंदर आयोजन को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, गोपालजीवन स्वामी, ज्ञान स्वामीने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी शताब्दी महोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. संतो की प्रेरणा से मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के श्री

स्वामिनारायण मंदिर पाटडी का १०० वर्ष (शताब्दी) महोत्सव ता. १६-२-१६ से २०-२-१६ तक धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक पारायण, नगरयात्रा, श्रीहरियाग, कथा में घनश्याम जन्मोत्सव, गादी अभिषेक, श्री रामप्रतापजी महाराज का विवाह, रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, गरबा इत्यादि उत्सव मनाये गये थे।

अन्तिम दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, जिनके हाथों से ठाकुरजी का शताब्दी महोत्सव, अभिषेक, अन्नकूट आरती इत्यादि धूमधाम से मनाया गया था। बहनों को आशीर्वाद देने के लिये प.पू. गादीवालजी पधारी थी। अनेक धामों से संत तथा सां.यो. बहनें पधारकर अमृतवाणी का लाभ दी थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सत्संग की प्रवृत्ति में विशेष अभिवृद्धि हो ऐसा सभी को आशीर्वाद दिया था। पाटडी सहित १० जितने गाँवो के हरिभक्त पधारे थे। सभीने तन, मन, धन से सेवा की थी।

समग्र प्रसंग में यहाँ की सां.यो. शांताबा, सां. हंसाबा तथा सां.यो. रंजनाबा की प्रेरणा तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में संचालन कार्य हुआ था। (को. नारायणसिंह बी. परमार - पाटडी)

विदेश सत्संग समाचार

आई.एस.एस.ओ. अमेरिका पियोरिया चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आई.एस.एस.ओ. अमेरिका पियोरिया चेप्टर में ७ फरवरी रवीवार को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था, जिस में बहुत सारे हरिभक्तों ने लाभ लिया था। नीलकंठ स्वामी (ह्युस्टन) ने फोन पर कथा सुनाई थी।

१४ फरवरी रवीवार को वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री जयंती को शिक्षापत्री का पूजन-आरती इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे। जिस में २१२ श्लोकों वांचन भी किया गया था। शिकागो से शा. यज्ञप्रकाश स्वामीने फोन द्वारा शिक्षापत्री का माहात्म्य समझाया था।

(रमेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में शिवरात्री का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर ५० जितने हरिभक्त पूजा का लाभ लिये थे . पूरे दिन दर्शनार्थियो की भीड लगी थी . २५०० जितने हरिभक्त शिवजी के दर्शन का लाभ लिये थे। पिछले ४ वर्ष से अपने मंदिर में प्रतिदिन ७ जितने पंजाब-हरियाणा के युवक सेवा करते हैं। ए युवक इस कार्यक्रम में भी सुबह के ६-०० बजे से रात्री में ११-०० बजे तक सेवा किये थे। इनकी सेवा धन्य है।

अपने मंदिर के चेरमेन प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल सभी भक्तों की सेवा को ध्यान में रखकर सभी को प्रोत्साहित किये थे। इस अवसर पर भुज मंदिर से संत पधारकर कथा का लाभ दिये थे। (शा. तुषारभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीपनी (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विकेन्ड में रविवार को महंत स्वामी सत्यस्वरुपदासजी की उपस्थिति में सभी हरिभक्त साथ में मिलकर शिवरात्री की सभा में धुन करके शिवरात्री का उत्सव धूमधाम से मनाये। यजमान श्री तथा सह यजमानोंने पूजन अर्चन तथा अभिषेक का सुंदर लाभ लिया था।

महंत स्वामीने शिवरात्री पर्व का माहात्म्य समझाया था। श्री महेन्द्रभाईने आगामी पाटोत्सव प.पू. महाराजश्री के सानिध्य में सम्पन्न हो ऐसी जानकारी दी थी।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में ७ मार्च की साम को ६-०० बजे से ८-०० बजे तक महंत भक्ति स्वामी तथा नीलकंठ स्वामी एवं हरिभक्तों के सहयोग से शिवरात्री का उत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। यजमान परिवार ने आरती पूजन करके अभिषेक का लाभ लिया था। सभा में संतोने धून-भजन-कीर्तन करके शिवरात्री का माहात्म्य समझाया था। संतोने यजमान परिवार का सन्मान किया था।

(प्रवीणभाई शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) अपने डिट्रोईट मंदिर में फूल दोलोत्सव । (२) अपने ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) मंदिर में शिवरात्री महोत्सव । (३) धनसुरा मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (४) घाटलोडिया मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (५) राजकोट में मूलीदेश के हरिभक्तों की सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (६) पाटडी मंदिर में शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (७) महिसा गाँव में नूतन मंदिरका शिलान्यास विधिकरते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूल दोलोत्सव

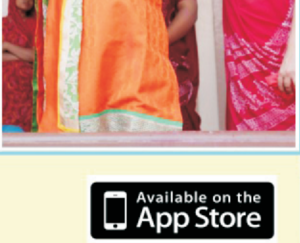

Praful Kharsani

ANDROID APP ON Google play

॥ निर्णय ॥

Available on the App Store

नये निर्णय की नई एप एपल तथा प्ले स्टोर्स पर उपलब्धहै ।